



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

I SSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १४३ म अंक ०१ जनवरी २०१४ (वर्ष १ मास १३ अंक १४३)



काथज

निर कथाव मा "छिन्नु"



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



वेति अकणिस
दिवी



अगल छोटका कला
स्र. गरमकासु माक
चवण बजमे
मादर मगवणित... ।

आह्वय

“अक्षयता”क अर्थ होगछ रिजवी जेकवा प्रबुद्ध ज्ञान तर्कित कहत छथि। हम कोनो लेसजिक करि लै, अक्षयिक भारणा करिताक कर्षे अतिरिक्त भेन जेकव प्रामाणिकताक निर्णय पाठकगणसब छथि।

हमर कहरेँ मात्र अह जेते हमर अ परिष्कृत प्रयास छी एते कारा लक्षणा ओ राहजनाक अग्रपानन भेन रा लै ए रियसमे हम किछ लै कहि सकै छी, मात्र अह कहराक लेन नीति संगत हएत जे जग भाषाकेँ रान कानहिँ हिसामे नगा क२ वखलौं ओग भाषामे अपन किछ अतिरिक्ति पाठकगण नग पवसि बहन छी।

हमर जन्म माहक मानीपुव मोड़तवमे भेन, हामिजीजी ओग गामक रंगनमे शिक्षक छना, मानीपुव गाममे बहै छना, हमर रौरूजी स. कानीकाभु मा रूचसँ साहित्य साधनाक एमामे रहु अग्रवृगता भ२ गेन छेननि, पारिवारिक संरक्षक जकाँ। हमर रानकानक उपनाम “छिन्नु” हिनके वाखन छियनि, जखनि हम लषा छेलौं (४-३. रथक) तँ ओ हमरा कहै छना- “छिन्नु मियाँ बानी, पैठमे कबानी, आ दोग२ हो सिपानी”। माए छन्द कना देरी सेहो मैथिलीमे किछ पद्य लिखल छेली। रानकान माहकमे रितन, तेकव पछाति पौहक गाम उदयनाचार्यक भूमि कवियनक माष्ट-पानिमे बसि आगाँ रठेत गेलौं। पिताक करिष्क कवर्षेँ मनाकरि आवसी, छन्दभाष मिह, प्ररामी, प्रा. नलेशे क्माव रिकन, प्रा. रिद्यापति मा, प्रा. बास सुपान टोधवी बालेशसँ परिचय भेन। तेकव पविशाम छी अ छेष्ट-छीन सुति।

वैशरादक पात्र छथि श्रुति प्रकाशिनक संग-संग श्री गजेन्द्र ठाकुर आ उमेशे मन्डनजी जिनकब सान्धियामे अ समुखान वचना सकनन मैथिलीक पठन सोसहा आएन।

संग-संग डॉ. शैफलिका रमा, श्री जगदीश प्रसाद मन्डन, श्रीमती ज्योति सुनीत टोधवी सन प्ररीण साहित्यकार सेहो वैशरादक पात्र छथि जिनक उमोहररुष्कनक कारा अ पोथी अगलक हाथमे रिटाव कवरक लेन उपस्थित अछि।

सादर

-शिर क्माव मा “छिन्नु”



भक्तवाङ्मये विवहिनौ

पिया केना क२ रितते हागुन मस अगाव ठे,
जीरण भेन गहाड ठे बा..... ।

कोगनी कहके ठाढ़ा पात
होगत मसमे अघात
एकसरि दुगि बहन जी, अही रिगु हमा मसधाव ठे
जीरण भेन गहाड ठे बा..... ।

भ्रमरक गुंजन नागध तीत,
केहने नियरुव भेलौ मीत
केना क२ सुधि सकत अ ह्युष्टन अश्रुवाव ठे,
जीरण भेन गहाड ठे बा..... ।

सखी सभ सदिखन अछि करनारैए,
रिडुवन रोदन न२ क२ आरैए
रिहूमन यौरन पसवन मेघ आ अतिमाव ठे,
जीरण भेन गहाड ठे बा..... ।

देखिते अरौर गुनामक बग
रिबह रौलोक कनुय उमग
कहु केना उठत अ मृत शियाक कहाव ठे,
जीरण भेन गहाड ठे बा..... ।

॥॥



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कतक आवाहन

आजू कूदित मन रौनाकण केव-कक मंगल गुंगान अय ।
जड़ उपरणमे स्वप्न हुनाँन यौरण महमह भाष अय ।
त्रैंगारिक रेनामे सपनहि
प्रियातम डूनमि कपोल हभव ।
अर्छ निम्नमे टिहूकन जहिना,
मासु मरोड़नि जौन हभव ।
अतिनर गुता आजू स्वगत दूबतायमे अगल काष अय ।
जड़..... ।

मठ उठि देखन धर्म माह्र केव,
आषण परिमान प्लष रँगन ।
पुत दर्शनक आशमे डूमनि,
मजून कूसकी पणकि बहन,
दनु बस्ना उंडाव दठ बि हेता त्रुथन अहक पवाष अय ।
जड़..... ।

असमाजसमे दूहू बैवरी,
माह्रक लोचन सुधा भवन ।
रौम हम तँ लहक ब्रती,
तमय अषन प्रेम धधकि बहन ।
जगनी छन्दए डोहसँ आफन स्रार्थिहि हमार जहाँष अय ।
जड़..... ।

दवण डूरि नाथक माता केव,
कएजौं चठपठ ज्ञान हम ।
कमकम केसव जूनी चमेनी,
कनदेरी गमगम अणुगम ।
देरकी नन्दन रँसी रँजारैथू रौवि-रौवि द्राक्षा तान अय
जड़..... ।

संभरि अहाँ ननदि ले अणुजा,
रँमि कम कएजौं ताप हभव ।
ले तँ हँमि बिबहक संतापे,
पीरँ जेतौं कखलौं जहव ।
आषरँ उपहासेमे अही जेन रिडे, धान्यरव दान अय
जड़..... ।

॥॥



मिथिला-पुत्र

मिथिलाक रैथीकेँ सहए पाऊनि
समेलिया रिखाहक दर्शि
सतलैया पोखरिसँ पटरुषी धरि
कि कसुन तकलौ
केतौ ल भेठन
सत बाकनि सत कनि
नख मास ले
पौसठि रैवख धरि
मयना उठरौत बहनी
प्रसर लेदनाक ठीस
तखनि जा क२ भेन
जीरण संघर्यक जीत
दिरमेमे तलेगन रैहकन
बिदेहक आँगन जलमान जगदीश
मौनागन गाढक फुन गमकन
तागसमे लेठक नारा चमकन
पुराग्रहक चपेष्टमे
जाति-पजातिक गेँठमे
ओमवा क२ मैथिली
भ२ गेन छनि कि सुनि
रौदना गजेनक आशि जागन
सुथेत गुनबिमे फुन नागन
कमकन जिनगीक जीत
रौयष्टिक ले-
पनिमेत गामक जिनगी
मात्र सैहथ आ रैवमा ले
मौरंगसँ मिथिया धरि
चमकि उठन अद्वेषणी अकाम
केकरो ले छन रिसरास
द्विजक ह्रुवदेयाक संग-संग
अज्ञेपक मोती रैहत... ?
स्रातारिक छन उगहाम हएर
ह्रुदा ! तिवसकावक झेठ ले
जीरण-मवण तँ प्रप्रतिस्थ नीना
तखनि केकरोसँ केहेन ह्य ?
अरतावरानक सेहो होगत पवातर



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कियो पणही देत की ले
कोला ह्युगा ले
ले उतुथानक आशि
गतनसँ घृणा ले
अकान भेन तँ रिमाँठ टिरा क२
वाति-दिन समकमता दीप
जुडरौत बहन
अपन गीताजनि गारि
कमप्रायागज करौत बहन
कोला कन्य कप्रायागज ले
पत्र-पत्रमे समन्यराद
कनमे धाँस ले
जीरण दर्शनमे सेहो
चनि गेना भोगेन्द्र
ले तँ उतुव भेष्ट जगतए
यात्री, आवसी आ फज्जबुसँ
सेहो कोला तुनगा ले
आन गचना-पौठीक कोन गपुग
जोक चाणी ले धनहा कहुए
रिऊ ले रूँडा रिक रूमए
ससकाव ले डोडर
थरुँपी किमान मजदुबक कप
जुँदु रैनोमे कनमा थियारुँथि
सबन धरौन रैन्याक तुप
एहेन सामन्यरादी-
फाँसीपव चटा ज़ाएर
हुदा रौँठेहीकेँ अथना
रौँठ ले देखाएर
केकरो ले सुननक
सततिक कोन कथा
अछरुँगिणी सेहो सहत बहनी
ए जेजिनक सेहो देन रौँथा
ले केकरो तव कवर
ले केकरोसँ डुगव ज़ाएर
सरहक शोणित एरुँहि वंग
केनक रिबोध रौरसथा रौँठग
मबन गवीरक रौँग हुदा की
पुवहित-पात्रकेँ भविष्यव चाली
धुव-धुव रौँस रिका गेन
काहि काँठ नुँठरौँत रौँहरोली



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जेस मात्र ले दया अग्रजके
सिहरि-सिहरि अत्रि-उच्छराम
कहियो ले अगिना गेव प्रजारथि
केतए बास धर भूत पिशाच ?
सभा रोजेननि धानक ठेनक
अपनि जातिमे पडित देखु
भाँज प्रवाएँ जठन कर्मकांडक
मागक समान ले धवती रेटु
मात्र राँपव आले खातिव
करै छथि प्रतिष्ठा सामन्त विरोध
समाक समाज मिथिलेमे रँनते
जगा बहना समतार रौध
अस्मापसँ ले गंग छुआरथि
तथनि केना क२ हाड छुआगत
ममः दीपसँ हीयमे तकरी
मिथिला प्रवक सपनदस हएत..... ।

सधरा-विधराक रीचक थानि
भवरीक केनक प्रगाम
तादरक अन्हावमे ले धावनकनि
उनरी चाँडवक आनि
रँडकी रँलि वाति-दिम
सुखाएन पोखरिक जागठ पकड़ा
सबिताक राँठ जेहिँत छेनी ।
केना मरगारव हएत
मकोरँकी उद्विग्न छथि
मिथिला प्रव बगोकव डकेतकेँ
तकमोडसँ सुगथ दिम
आनए जेन रँकन
रूदा केकरो ले सुगत
अपल रँजन्ता अपल रँमन्ता
पचरँपीपव ठाँठ
शँतदसकेँ तकेत
वाति-दिम समताक
गीताँजनि गारैत
तीन जेठ एगावहम माघ रीतन
एक धाग जमीनक जेन रावँठ निकसन
रेटोवी मसमावा रँपे रँथाएन
रँवमा कानि बहन अछि
पिडदोअसँ रिदीर्षी भ२ गेन तीनु प्रव



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कानि बहन छथि बायसथी
बघुरबक सहचरि मग नाँउ ।

माता मग उताप
रैबदास करए पड़तनि
मिथिलाक अशि
मिथिलाक अशिकेँ जगम देननि
सुबक प्रभु सेहो कोणथमे
उमेमे तँ मग: छथि
हृदा ! अथनि जगतक अशि
मरे तरणत सुखिण:मे नगन बहत
परिवारमे अतारक तार मोतारिक हएत
अ तँ हरिहर कका भ२ गेन छथि
ठीकेदार सहैरँ द२ देनकनि ठैगोव
अन्टोक्कमे... ।
की अँसँ समाजक दासितर पूर्ण भ२ गेन
ले कथमणि ले
जे मिसिब जिक मिसहकेँ
हीसँ नगा जेनक
अपनाकेँ साह्यारदसँ दूव तगा देनक
निबतव सतरैबसँ
रौतण-सोनकणक खादिकेँ तबि बहन
ओकवा ठैगावे रँना क२ ले छुँछियौ
ओकव मिथिला दिस तकियौ
रएह शीति निकेतण
रएह ओकव रिश्रु भावती
तखल जगम जेत दोसव मिथिला पुत्र
हृदा ! अथनि तँ अँसँभरे नलौत ।

॥॥

(सौँ जगदने प्रसाद माँछव जिकेँ सखलित...)



अहृत लेन

आफन पडन रिगलित नभ दिस तकेत,
छेजौ लेनि केव निरिणीक अतीक्षा करेत ।
केना कठैरि एं सतापी जालिनीके,
ओ तँ छेनी हमले कठैत ।
सकमोडि देनक अस्तुमिनेके
लेनाक पुडन अतिम प्रेम-
अहृत अहिना कवरि की ?

पददलित केनक रिय बहित फनके ।
दूध लेन लावसँ सरारोनि,
देननि हमर आमोके मड वि ।
निःछन ककामगी भ२ भार रिभोव
देखि नगजौ अरनाक धकेत ख्राव
सुलेत गेजौ सुलेत गेजौ ।
निकतव हमर रोखा म्नीष भ२ गेन-
मिसँ लपथा भविगव नागन
की मोटेत छेजौ ? रासुनिकता..... ।

टागनक सेजगव पडलि अर्धगिनी
धाग, बजत, काटन, भवन..... ।

रुदा ! सदिखन खसित रेदना केव दासिनी ?
छन अर्पुनि योरन अहृतु लेन
हा ! तात केना कएन रवण
एक गाली रसमक सुकथा केव
कतक रसम पटपण..... ।

गामक चुनरूनी मोषालिसा
अहवि बहलि कणक गृहमे-
अमहाय तातक देन रिपदाके
भोगि बहलि जोगि बहलि ।
केना पाव कवती नछिमन बेखा-
अपण रिहूमन हिलोवके
केतए कवती अशुष्ट-
हमवासँ कएनी अपण पीड । अकठ
पायापी नव क२ देननि जौरन रिकठ
रूढ़ कतक डोलि गेन आमन
नीकाक अजगव तोडि देनक प्रीति सुंभ



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कठोर आदेशे देननि अगण दावाकेँ-
आजूक पशुपतेव पुकयसँ गप्पा
कथमपि ले कवर
ले त२ ?
हम अटंभित अन्न शिथिल
कर्कित चरित्र न२ क२
धुवि गोरौ निःतवंग अगण पुवाण पथगव
काँपि बहन दुहू पग..... ।

कोन अगवाध कयौ
हम तँ डेरौ पौडित लाव ।
अहस्तु लेनसँ मरुलेत लाव ।

॥॥



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ककषेवमे बाधा

नरणीत अहाँ पतराव रँनु एं ककस सरोरव जीरणकेँ,
ठिठुवन कदन्न जङ्गला ठहवन सखी हँसी उडौन अर्षाकेँ ।
आकाशित चहुँ दिस स्वप्न तक,
रिक्त जड़ चेतन नभ धवती,
जन रँनु रँसन घन घन घटा,
त्रासित बाधा मन अछि पवती ।
नरणीत..... ।

सत असत कर्म रीति घुमि बहन,
सभ जनितो अहाँ अनजान रँनन,
भेष्टत की जल सहासेँ,
अरना टिकोव आ लाव भवन ।
नरणीत..... ।

नाशित कवती ओ हिन्द सती,
जमिक नाथ ब्रुष्टु त्रु आचनसँ,
संगहि ककणीत वृन्दा-माथुवा,
जेरँ पाप सभक हाह माँतत जँ,
नरणीत..... ।

थोनु कष कर्मिक डोवा डोवि,
डुमु पीसुय बाधा-वसमे,
उत्ताप प्रेम तिन स्वर्णि बहन
ले आरँ ग्रा योरन अछि रनेमे
नरणीत..... ।

॥॥



मधु शोका

मधुग रिना सुन्न उंगरण ले, मधुशोका आएन ।
कत रिणय रिणशे केतए ले हीय 'आवती' हवाएन ।

सुनु शिर डलिया सुगी रँनि हमरा निबहएजौ,
संग महादेर बास दिवबकेँ कर्कित कथलौ
मधुग..... ।

हम कएन केतेक अखुग्रह ले अछुँ हमरा रचन देन,
मज्जुन गिनन केतए गेन ले, केतए रौत कनित गेन,
मधुग..... ।

हम अभागनि मैथिली ले, अगले देन घात,
सुनुव खलकि दुःख कातव ले, तोड़न दमिली गात,
मधुग..... ।

रिक्त मल्लव सुनि शिर, आनन हँसीँ उमड एन,
जुनि लहक मिये, अँक नखन बघुरव संग आओन,
मधुग..... ।

॥॥



बैबलसंज्ञा

बिगतम आरुण कुरुवन दवा मल,
ईहृकि उठन वा ।

मुक शिनिव पुटकावधि केना ?
दुव द्वाप मज्जा ।
जाहिनी रंजन कत रिव रिवजन,
तकनी माघ मना न फलदन,
सबम रससु क नलित बाब्रिये-
हहले कंगना ।
बिगतम..... ।

दादुव ठहकए भुष्टि सवारव,
अश्रुवाकसँ सँटित कोरव,
कीव मृदुन अणि टैते रीतन,
रिहलन लेना ।
बिगतम..... ।

अहँसँ मिलहक रंधा कएलौ,
सौल आस रेशीथ बुडएलौ
द्वन्दैक मीन नीव रिव राराहन -
सुलन पनना ।
बिगतम..... ।

जेठक रौदी काष्टि बहन डन,
सुखन कानन साँष्टि बहन डन,
उदधि अकामे जजसँ तिवषित-
नरानन अंगना ।
बिगतम..... ।

सौल-बादो सौल मना न,
तुहिन गत तव आश्रिन आएन,
कातिक-अगहन रिवसधि -
पुस माली डुधि ननना ।
बिगतम..... ।

॥॥



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कोप भरणमे करियौ

कमलि किए सूतलि छी रँगरुँ ले कलक टाय अय ।
मिथिना हम चनलौ, छँषाणगवीसँ आग अय ।

अहाँ जौँ एना बहरँ तँ हम केना ज्ञीअरँ,
सदिखष करिते-करिते रौंषे जहव पीअरँ ।
एना अहाँ कमरँ तँ हम क२ जेरँ दोसव सगाग अय,
मिथिना..... ।

अहाँ केव कप देखिते कामदेरो कालेत छथि,
“सृगलसनी“ केँ ओ उरँशी मालेत छथि ।
रिहँसन मदक घृषणा नाली लौंगिया मिबटाग अय,
मिथिना..... ।

छगणनान झनवीसँ कणक हाव नअरँ,
आजू रौंष पुनमकेँ, पार्किमे घृमाअरँ ।
हहवन मलक छुष्टा, ले रँगु हवजाग अय,
मिथिना..... ।

डुँरुँ श्रिये, अहाँ जल्दी नहारुँ,
कोप भरणसँ उँठि क२ नगमे आरुँ ।
मदहि दूफ़ी माक, हम अणलौँ अछि मनाग अय,
मिथिना..... ।

॥॥



श्रेयसीक रिनाग

बाली रैबथा गहाव,
बाली रैअसक जेव,
मिनासक आशामे रैसनि -
डी आरु ले चकोव ।
बाँठे तँ तकिते तकिए,
लेन सुधि गेले,
श्रेयसीक रिनागपव ले-
अहँक मियास एले ।
ठनका पर्जय मटन शोव,
तिबपित बृह मोवनी मोव ।
मिनासक आशामे रैसनि,-
डी आरु ले चकोव ।
रौददी जूमि रैनु,
मोस धुँष्टि गेले ।
पारसक शीतनता -
आतशु तेले ।
अशु भगजोगिणी दर्शन बोव,
नष्टकर मेघ गगन घनघोव,
किएक छन्दए तोडाँ बहरोँ ।
हाँ! लखार मस टित देव ।
॥॥



वका

खूबखूब भैया सृष्टि मियौननि,
रैतली काकीक हाथ कमन ।

अध बसनि टोकठनली भोजी,
रौंठे पमावनि प्रेमजाजान
मैथिली कहबथि पर्फेक्ठीमे,
सूर्णनखा रैलनी बानी ।

लना प्पेठे फ्फीव रीनु आरुन,
मोरौंगन नटारैथि पठेबानी ।
अच्छांगिनी लोनीसँ कपित भ२
शेखनाद केननि मामा ।

हस्त डुक न२ मामी खेहनथिह,
भुञ्जन मामा केव पोजामा ।
अपन पुतोहूकेँ मोकि अल नमे,
रैनि गेली गामक सबर्पाट ।
धर्माचार्य देर मदिब केव,
रूदा छदए भवन पवर्पाट ।

केतेक घरमे साहि काष्ट,
शोति समिति केव आरै प्रथान ।
बक्कक छथि छुठकीमे रैसन,
केना रौंठत अरना केव माण ?
बिद्यानयकेँ रूह ले देखन,
धएल कहसौ शिक्षा मटिर ।
कष्टन उत्र केव अह नीनामे
माबन गोननि मुक गवीर ।

रूडी गणारमे हूबहूब जन्मान,
कर्मशिल नागत दस पवसेष्ट ।
लोकबशीह मोठबमे घुमथि,
आथि गोगल्प काँथिमे सेष्ट ।

सत काजमे दियो भैँष्ट,
शौट कक रा नघुंशिका ।
बागराजकेँ रिसवि जाडु,
आर्यारित आरै सद्यः नका ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बाजनीतिमे अरु-रिउ केव,
ले कोला अरु ररु रिउेद ।
अगल पीरथि ताड ी दक,
मनी रिउाग मद्य निषेद्य ।

बाग ररुतक गेन जमाणा
सुनु ख्रितानी रिउरु मंगीत ।
डकन कवथी गोक रंगन
आ अरुपल राविक गहुआ तीत ।

॥॥



होवी

हाथ अरिीव काँवर पिचकावी,
भानपव गदवन चाह उमंग ।
पुवन तैया होवी खेनथि,
नर लौतावि सारि केव रंग ।
कखलौ डूमकी तैत अधवमे,
जुझीमे कखलौ हिनकोव ।
नीन, रौजनी नान गुनानसँ,
वंगननि चप्पा पोले-पोव ।

'छिन्नु' लैनपव अचवज पसवन,
देथि ज्ञाता केव रसन्ती बूझ ।
एखलौ त्रुंगारक आह भवन दूदा -
आथि अरुवाव काण डहि न्न ।
हम गुडनयनि केना क२ कएलौ,
मदुसँ उंगडुम मवु प्ररिध ।
सकन तन अछि रौकाव दूदा हम,
ध्राण शक्तिसँ सुघन गंध ।
भौजनी न२ रौदनि आ थापडि,
माडि देननि तैया केव अंग ।
हवता हाठन लैन लोवायन
भूतन खसन होवी के वंग ।

॥॥



माँचर्न जमाणा

घुआ पोती घिन रँवहव जन्मल,
आएन रँवमुडा मिसी फर्छ ।
झुआ भैया चुनबी ओढ़,
भोजी पहिबनमि ज्ञानली मर्छ ।

काकी मबोत काढ़ल रँसलि,
काका गव धकम केव राणा ।
कदली कमियाँक हाँथमे रीगव,
आरि गेन माँचर्न जमाणा ।

भवि दिसक गणना जौँ कबलै,
रँहुआमिसक सात रँव मतमि ।
भवन माँम झुआ आएन छुथि,
अँगठाव रँसलि नः झँहमे दतमि ।

अम्मी दशकमे मायसँ मनी
हेव माँ आरि भेली मनी ।
मायक भ्राता केव नाम की बाखरँ ?
माया पिघलि रँवना मनी ।

अगल लणामँ रँस पिगवगव,
मकव सरइ । टायनीज फरुव ।
भुँठका-नाथकेँ डार्डी घबमे
ठानी मंग गेलि अतः पव ।

चवण स्पर्शि मिर्रीन जेनक आरि,
छुआ केँटकेँ भः गेन राय ।
भोजी एकमवि मभूशानामे
भैयामँ गेलमि मोल अघाय ।

लना पछिमक लौली उँगलै ।
माँ मैथिली केना रँजती दैया ।
रात अँगवेजिया माथ घुमन ले,
झुदा करै छुथि याँ ! याँ ! याँ

तिनकोव मखल नीक ले नागए,
ले सुझादु मकेयक नारा ।



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पापकर्षि चाङ्गीन दलिया जेन,
मौड पिजेतेल रौमनमि रौरौ ।

ॡॡ



भृत्तुवाज

सोहव गारैथि कोजनी रैहिसा,
कीव मधुव धूमि रैजरेथि साज ।
जलनी रीणा रादिनी हरित,
अरताव जेननि सद्यः भृत्तुवाज ।
गरित उंगरण मधुगक गृज्ज,
रर्षक पुष्पक दिरा सोहनगव ।
सविता नरनर शीत उदधि छुथि,
महु वसानमे उमडन मङ्गव ।
माघक सातम धरन गजोबिया,
भेन नरन भृत्तु नृप छुठिहाव ।
छिन्खाव भवन पायस पुष्पसँ,
हनदेरी साजन उंगहाव ।
भगजोगिनी केव पटम स्वर स्वरि,
अंगण महमह रूथ दनाण ।
दशो दिस मानमान गेण हुनन,
सविसरै रूठ भवन खरिहाण ।
वरि सग स्वयमा अडिजन उम्मा,
पात-पातपव पडुरी रसात ।
रिबहिसी रैसलि कत आशिये
रयः तापसँ उगठन गात ।
मातु उमा मम रुदित रिभूषित,
सजन नृपुव चवण चमकन ।
शिरवात्रिक अराहन भेजे,
नाथ हशैशिव छुथि गमकन ।
सरत जडन आ होनी आएन,
अरीव गुनारी हरिअव नान ।
स्फितिज धरित्री एक रैगन छुथि,
दोनक दुप्पी माँमक तान ।
छेठ प्येय केव भेद छिठिअन,
वृह जूषाण सगमे रान ।
छेठकी कनिसाँ ठोव वंगलि आ -
रैवक भवन पाणसँ गान ।
भैया भांग स्वधामे साणन,
शिथिन पडन छुथि माँम गुसाव ।
वंगलौ हम भोजीक चकारै,
रिदा रैसनु ए जाकसँ गाव ।



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

μμ



नरनुबिया होवी

रौंढी क पसारीमे डूमन सगरो सिथिना पाम ।
रौंगमती करेहक अतमे, ओमबाएन हन्वार गाम ।
भदैया संग बर्री बूँडन, जिवातमे फाँटलि पंग ।
रौंति गेन हागुण रुद, डूँट जेतौस जममल ।
लषा ठैनी हेरि बहन, सन्त जेन खव पतराव ।
बामु रौरौ सुतन खाँठ पव, डूँडन थोपविक टाव ।
पौत्रक नीन जहिना फुजुन, मसाडन कंठकवण ।
मठ मनि डूँठु ओ रौरौ देखु षत तरेगण ।
बाम जोचन दौडननि गाडि पढेत रैडि पौथविक मोहवि ।
रैनि कपीनि लषा छैठका देनक थोपडि जार्डि ।
नामिया देखि आदिलके कदरौ कएन दनाष ।
शेनु वंगननि गौरव खानसँ छैठका पाहुणक काष ।
तीन फुँटिया नाना पेष थोटाह, हाकिमपव हफकन वंग ।
फुदल छिन्खावक घेनमे, मिनाँन टिनी भंग ।
भवि कठौत पायस भवन, घिरही पुआ केव संग ।
भोजी तन रौरव गनानसँ, डमडन माह डंग ।
टैतारव छैठही तामे, गारिथि छनहा दन ।
छैठ डीन गंजन-सुमनु, घुमिनु तूत रंगन ।
सा वा वा वा गुंजि बहन नुँठकन जिक रंखान ।
मियाबाम जय गानसँ गमगम मैथिल दनाष ।
डाकूँव भैयाक सावपव ढावन कारी मोरिन ।
देखि लषा गण केव होवी गहमला घुमि गेन रिन ।



टैतारब

आएन टैत मरुव बंग पाँचम,
ऊपरन रूँनरूँन गारय ना ।
मन-मन प्रवरौ मनय रमात,
मन-मन देह मनकारय ना..... ।
हकके हक कोगनी रूँरूँव रण,
चहके अलि पाँचलि मरुवण,
हडके मोव मोवनि जोचन,
हणके मृगी पद हल-हल,
भन-भन मन भनकारय ना ।
मन-मन..... ।
भानिनी थिनायनि गहरव,
रहिना हृदित हीय हवहव,
मथी लह मातनि कोहरव
भोजी बेह गारैथि मोहव,
झण-झण तन डनकारय ना ।
मन-मन..... ।
प्रियतम रैथित अ आखव,
लावक मियाली मरमव,
कोमन शियाा भेन खवखव,
सुथि देह रक मन पातव
कण-कण पठ मिहवारय ना ।
मन-मन..... ।
ऊपठन हणगुन केव कम रूँन,
हहवन गुपुव सुव मून-मून,
रिक्त लैण भेन अरव सुन
अडि कोन कातमे अरगुन ?
घन-घन घण मनकारय ना ।
मन-मन..... ।

॥॥



ब्रत एकांशु

नुष्टंफण जी केव चकचक भाव,
कपोत निम्बविया रेंगल बसाव ।
श्रीशैल चतना न२ घष्टही काव,
आरि बहन थिन्ह सास्र आ साव ।
डुठडुठ तम मम भवन उमंग,
गृह घुवनि रिपि माताक संग ।
मष्टपष्ट शोभरि टाह रंगारू,
पहिल कहे आफजा तारू ।
मन्नी छुथि रँड जोड़ पियासनि
भुवण समुत्तीपुवसँ मैसुव आयनि ।
जनथे सेरै दनिपुड १ क रौव,
ममिणी त्रजन परोव आ गचना मोव ।
जूमि कक अकबहवि श्रेणी जमाय,
अठैक सास्र तँ हमरो माय ।
माय हमव आडस्रवि धर्या,
सनातन पालिका संग यष्टकर्म ।
मतिस्त्रम नम्राणाथ रंजाव गेननि,
हूनन परोव माँड गचना जेननि ।
देथिते भवन माँडक मोवा,
हूजनि सास्र रम्ल दूह रौवा ।
पाहुण देनथिन घब घिनाय,
केना कवरँ हम नहए थए ?
कालि हमव छी ब्रत एकांशु
मड्डेन गृह केव सगरो प्रान्तु ।
हेकु माँड सष्टन तबकारी,
गं गाजनसँ थोयरँ आँगनराड १ ।
शैस चढ़न अम्ल ले थायरँ,
रौआसँ अंगुव मेर मंगाएरँ ।
काकूक जेन टाली आमक टेवा,
माष्टिक टुलि आ रँसि टंगेवा ।
मिगापुवी ले टिमियाँ केवा,
गुह स्वधा गड सभन पेवा ।
शोभरि गं मैसुव ले गाम,
केतए हम तोकू जावनि आम ?
रिक्ठ भेन बरि ब्रत एकांशु,
ए चक्रव हमव जरीन अशान्तु ।
नुष्टंफण मथमे शोफित अष्टकन,
भाव रहिन दूह दूया यष्टकन ।



मनुषीशुह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हम की कबरें सब दोय अहाँकेँ,
पारनि मास किएक रँजोरौँ माँ के ?
ताकए चनननि कर्णिक केव गाम,
हाँ छुलि माँ गठरी आम ।
सोमते आरिं खाँपव खनननि ।
शोभरि जेव ठहकाँ हँनननि ।
सुषु प्रिये तोक सुखन अछि,
जन रिग हनाव हीय रिजन अछि ।
एहेन रौंथा लेँ हँमि उँड रौं,
ब्राम कँठगत नीव पियारुं ।

॥॥



अनाचाव

रिहूमन रिजूकन द्याभुक मल तनए गडन अछि थानमे ।
न्याय-धर्म तू हिन्द घोषाएन अनाचाव केव जानमे ।
पवदावा आ पवक द्ररा दिस,
अधम क्रमोचन हुनकि बहन ।
बाजकोय केव रात की कछु ?
द्वैत रस रीटि हृदकि बहन ।
जनतंत्रक अचाव रस्रथापव कृष्णी कौबर भानमे ।
न्याय ।
उद्दान दर्शन आरि अलौकिक,
भेन रिदेहक कथा रिबुष्ट,
सतजन नागन भौतिकतामे
बूछ अयाटी पूज शृष्ट,
खब खरौससँ मानिक धरि नाचय केँटा केव तानमे ।
न्याय ।
काठेव न२ क२ गृहसु धर्मकेँ,
पावण क२ बहननि मन्मतान ।
जानकी माता पातवि सजाँरिथि,
मधुशाना पेमननि हनुमान ।
गर्भक कथा श्रुण हवासँ समायनि कानक गानमे ।
न्याय ।
जाति, पंथ, भाषा रिभेद अ,
अजातंत्रकेँ सार्डि बहन ।
फर्ष्टन बाजर्षिक छफरुह,
अपल अपनाकेँ जार्डि बहन
देरभूमिकेँ दियो कृष्णि हँसि गेन दानक टानमे ।
न्याय ।

॥॥



अभिन्नर मिथिला धाम

“माँ मिथिले अभिन्नर मिथिला धाम ।
अहँक कोवकेँ छोड़ि आरँ हम्,
ले जाएरँ देसव ठाम ।
माँ मिथिले..... ।

रौबएलौं सगलौं आरँ तुरणमे,
केतौ ले भेठेन टैन ।
अकरँक बिकन दिसस दुःख भोगलौं,
तमस कष्टे छन रैन ।
माँ मिथिले..... ।

नरथेन नररान देखलौं नरन चानि,
भाँज तारहुक ले भाण ।
तात पुत एरु सँग रैनस,
कवधि सुवाकस पाण ।
माँ मिथिले..... ।

मैथिन दीन जलव हँके छुधि,
रुदा देर पितवक माण ।
छेष्ट प्येघ रीट नस्मिण बेखा,
ले केकरो अपमाण ।
माँ मिथिले ।

उद्वानसँ दर्शन सीथि राँष्टर,
अयाटीसँ, आमे सन्धान ।
भावती मडनसँ जँहम ज्ञान जेर,
आवसी यात्रीसँ स्वाभिमान ।
माँ मिथिले ।

उँर्छि विश्वाक राग देखिक,
कण-कण भार रिभोव,
रैदेहीक सती धर्मिँ उमड़न,
कमानामे हिनकोव ।
माँ मिथिले ।

गोरिन्द मङ्गक सुनरँ पवती,
थोनि क दूनु कान ।
शिर शक्तिकेँ श्रेष्ठसँ गुजर,



सुनरौत रिद्यापति गान ।
माँ मिथिले..... ।

खोवा चाडव संग भौषी अदोबी,
रथुआ तिनकोव मथान ।
आचमि स्यैत रनासक जमसँ,
गजोर्छि पठैलीक गान ।
माँ मिथिले..... ।

आन धामसँ बाम मोहनगव,
कनदेरी क गहरव ।
पञ्चिमक ब्रुवित गीतसँ कटिगव
अगन रौष मोहव ।
माँ मिथिले..... ।

॥॥



हे अत

बिबथि बहन जी अरुव जानमे,
जोड़ि कत छलि गेलौ तत ।
काँपि बहन छथि सुर्यदूखी आ,
अरुवथि बृह्म कलेजक पात ।
ठैजक सभैली लषा त्रुँका,
आशि नगोलि घुमथि रथान ।
के देत उँदवान धामक पौड़ ।
के देत मिठगव मगली पाष ।
पडित रौरा खष्ट पकड़नि,
ककवा दूखसँ सुनता गान ।
श्यामजी अत्रि अभावमे पेमनि,
आरि के कहतनि पौघ अकान ।
आरि माँक दूखारि सुन अडि,
सनेगी सभ ओजतीमे ठाढ़ ।
भक्ति सागवक धार बिलोकित,
ब्रुं गगनमे अरुँक कहँव ।
अरुमोहँत अ दैरक नीना,
केना रेलीनि मरि तरन ?
बिबलक अँगनसँ रौहव,
जग मवा जीरन दर्शन ।
कवती केना श्रुँगार मेनका,
कवतनि के कपक र्पण ।
दैरबाज छथि कोप तरुमे
जन रिंग कवरि केना तर्पण ?



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रुथ मनीष कहियो ली देखलौ,
सुथ दुखसँ अहाँ बिनग विदेह ।
अतिम तीथ मली डी राँ,ु,
दर्शण दियो एक लैव मदेह ।

॥॥



आमे उद्गीषण

अहाँ अगल गङ्गल जी योष्टि धखूव केनामि ओ,
ईष्टन हमार आमि ओ ना ।

धवागव अएलौं एदोयक दिन,
मातु-पितु अहँक भङ्गिमे जीम,
रूमन मभ जन रम रम जेनमि हमार घब राम ओ ।
ईष्टन ।

लन कानहिसँ जी हव भङ्ग,
सुखएन कवम-धरमामे वङ्ग,
शिवदानीन संगमे शँकरगव रिश्राम ओ ।
ईष्टन ।

देखिते रितन स्वामयी रँथ,
जीरणसँ दुर भागि जेन हर्थ,
जननी उँठनि तूमिसँ जोड़ि मोहक गामि ओ ।
ईष्टन ।

चहूँ दिस कानक जेन एहार,
कवम गति हँसन रीच समधार,
उँदमि मकन्हनि जेनी हीगमे पसरन त्राम ओ ।
ईष्टन ।

आशु अछि मात्र अहीसँ मोह,
होएछ अपन भागव जेह,
हक दुःख रा कक हमार निवस जीरणक गामि ओ ।
ईष्टन ।

॥॥



केना क२ अतिम नमन कबरै

(कथा झुप हलपव एक छेष्ट बचना)

केना क२ अतिम नमन कबरै,
आँचबकेँ अहाँ कर्कित कएलौ
पुत्र जग सैहँतित सपनामे
ककणाधारिणी निदयी भेलौ ।
ले देखलौ आदिन ले शिकि मिखा,
ले नभ देखलौ ले देखलौ रसुवा
ले छेष्टन छोह ले मृदुन फेम,
ले मोती माणिक्य बजत हेम,
पाँच मास अहँक गर्भमे बहलौ
जनपरिजनक तिवर्याव सहलौ
अपेत बुमि कएलौ अहाँ गर्भपात
भेन अर्पुणी लषापव रज्जुपात
अछि कोण ओ शक्ति मद्यसुतमे
जे रैष्टीमे ले दर्शित भेन
मणिकर्णिका क शिखाद सुमिते
बृह्म करवक यौरण मष्ट ध्रुि गेन
दुःख एक्क रातक तातथिया
सृष्टि देवनि मततिकेँ गवत पिआ
पारण आर्याभूमिक सुनयना
रौदेहीकेँ देनी माष्टि मिला
भररक्षणक ज्ञा केहेन दर्शण
नीव झीव रिषु रिगतन जौरण
तज्जि गेन प्राण तँ अवन अर्पण
अमिय मधुसँ पुत्र कएननि तर्पण
एक रौव हमरो जौँ कहितौ अहाँ
जीरणमे सुधा रोषि देतौँ माँ
देतौँ मतवर्गी पविषाण
पुत्रसँ रद्धि क२ कबितौँ सन्धान
दिअ आशीय हमर जननी
झेवि रैष्टी रनि ले आरी अरणी
ले सुख पुनि नर किसलय दन
ले जनसँ पहिले छेष्टए अवन ।

॥॥



पारस

नगिने आतप अलन अलनसँ,
पसवने सगरो लौलकाव
तकनी-रकनीक अल्लिनेशेसँ
जरीर-अजरीरमे अर्षि तिक अल्लव
मोष रिबंजित द्दन्द मशकित
रनन सरोरव कबुय ममान
सुखन किमनयक कोमान काति
धकिकि बहन नर नता रिताण
नष्ट कवरँ ए प्रनय भर्कव
प्रकष्ट भेननि अगल देरेशे
घन घन घष्टाक सग आगमन
शीतन पारस रूणक रौस
नर वंग नर धुन नर नुयान
घुवन सृष्टिमे नरन ज्ञान
पुष्पा थियनि काटन उंपरन
हुवन अमबरकेँ मधुव गान
म तिति सरोरव कनकन सविता
नूतन नीवक खहखह धारा
आएन प्रयकमे दिरा चेतना
भागन रेदनाक पुवा अरियावा
पंकज प्रसृष्टित भेन सरोरव
रकः काक टित शीत मोहनगव
भवन घष्टामे मोव मजुवक
नाट मधुव रँड नागध कटिगव
गोधुनिक परन रेगमे
चहकि उठन भगजोगिनी
रयः तापमे उमडि गेनि
मिननक रियोगमे तकनी
उन्नत घष्टा सग मधुव प्रेममे
नव-नारी भ२ गेन रिभोव
दुग्ग मासक अ कटिगव पारस
उमडि नि नर सृष्टिक जेव



गीत

लिया निर्मोली खलकि गेन कंगना,
रिखन मृगी लेना,
किएक अहाँ रँगलौं ओ -
प्ररामी सजना ।

आलि भेन शीतल उँरिया बहन पानि,
सुरामित ज़ीरनमे उँरनि गेन ग्लानि,
सुन्न प्रेयसीक मिलन छद्दए अँगना,
रिखन मृगी लेना ।

उँमडि बहन रिबन प्रखव आतप समान,
रुकनमाएन मुँच अंधव मकयष्टमे प्राण,
पँसन रौन्ड मर्यादाक सजना,
रिखन मृगी लेना ।

अरुणहिमे ज़ीरन अतिशोपित रगन,
सुधि गेन लह पुँष लोवसँ भवन,
आरौं कहि ल सकर हय सजना
रिखन मृगी लेना..... ।

॥॥



मनुषीशुद्धि संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

काका ओ (रौव करिता)

सिरुँ मवसएरौँ रैड मवखान छथि
डक्का जौड नमि काका ओ
दाँत कीटि दूनु जौँ सिफड रौँथि
हाँथमे नवकष्टिक मष्टक्का ओ...
भुजोमक पहवि मसूत रटे छथि
झणै-झणै लौंगम न२ हाँथी डिके छथि
पटतत्रपव कवथि छैछम्या
रिष्कुशेर्मिँ नमडव खम्या
रैवहव गाड तव गदहा रैना क२
पाँडिसँ मावथि धक्का ओ...
जखनि कोलो डन्दक अर्थ प्ठै डी
कठे छथि फफवपव लेख निथे रौ
कद्रु तँ केशा हम एक्क पहविमे
वैग-रैवगक रैगना सीखु
हाँथ मटोवि पीखाँठपव देननि
रैङ्कव मण दू ढक्का ओ...
ढकथे बहरँ आ महिम चवाएरौँ
कहियौ लै ओग गमकन जाएरौँ
एहेन वाकसमँ जाण जौड िड
तवि जिमगी अँक ग्वा गाएरौँ
रैजे डी किड जौँ नजवि मुका क२
थिमियारथि कहि भूतक्का ओ... ।

॥॥



हिसक बाणी

थापडि रौनशा केव कहानी,
आरि ले दोहवारुं अग बाणी ।

बाणा रौनज डधि सिगाव,
तक डधि जेना हूबक रिगाव,
दंतक पाणा घष्टि क२ रीस
हूबधि गुड-दुड अकेँ गीस
गारिधि दावा दवद जगानी ।
आरि..... ।

रवन् केव रीथि तेन टानीस,
अर्पित अहक चवणमे शीनि,
अहाँ जेन नरैनरै दुध गिनास,
लाव पीरि अगण बुमारिधि त्रास,
झमा कर ! छोडु आरि प्यानी ।
आरि..... ।

अरकाशि क रीति गेन दस साव,
पेशिलसँ आनधि मेरै बसान,
तवि दिस पाण अहाँ केव गाव
हुंपवसँ माटा बहन छी ताव,
चमेनीसँ तीजन अडि टानी
आरि..... ।

केतेक दिस सुनता पिह्र उगाली,
संतति पुवि गेननि दु गाली,



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

माया मायी क रिहूमन ठोव,
मां छुथि, टूप्पा ! साधल जाव,
लेना रनि जेतत श्रीमे रनिदागी
आर..... ।

॥॥



चनेमाक खोखब

सोनरुमाये कएन अतःस्य प्रवेशे,
हूनसन मल गेलौं नरन देमे ।
नीय रसधि कना धएलौं रिऊन,
बाखन जलनी गच्छाक माण ।
रौण अंगरेजियाँ रनि रँटाँ दौनक पवाण,
अर्थनीन मिथिनाये रँठत मोण ।
ध२ मियाण स्रनन सृष्टिक गच्छा,
गाँठि रौनहि लेलौं न२ गुरुदीक्षा ।
काँजेजमे रीतन पहिन सत्र,
आपुन तातक आदेमे पत्र ।
पट्टा ते आँरुँ अहाँ अपन गाम,
हेत ज्येयथक रिखाह रिद्यापति धाम
तन समकि गेन, मल गेन गुदकि
लौजीकेँ देखरनि हम हूनकि ।
आगत बरि पहुँचन जलम ग्राम,
नेत अत्र्यागत छथि ताम-साम ।
छहूँ-दिस भ२ बहन छनन पहन,
छिन्ह-अनछिन्ह सखामँ भवन महन ।
एक नर लौतारि रँहुआयामी,
पुढनसँ छथि छोटकी मामी ।
प्रथमहि हूनकामँ छैँठेँ भेन,
भेन दूनु गोठेँमे झपहि मेन ।
साँमे गुँती दीदी अनिता,
आफन माँ केव एक मात्र रनिता ।
देथिते देखेते आरिँ गेन साँम,
माँ तकिते रँठेँ ओसाव साँम ।
दीदी आँगन आएन हँसिते हँसत
माँ पब नगौननि ठौहि कलेत ।
हिनक लेन हेवाएन विमलेसमे,
देथि मामी पडननि पेशोपेसमे ।
चनेमाये सुखब दाङक रिता,
रँठाँ बहन हिनक लेनक मोता ।
मामी ! ज्ञ स२थ लेँ आँथिक गनाज,
माँथ दर्दनँ छन रँधित सत काज ।
सुनि मामी मोण भ२ गेन अनसित,
हूनक रौम आँथिये पीड़ । अतुनित ।
लाटिते लाटिते भेन लेन नान,



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दर्द पसवि बहन सम्पूर्ण भाव ।
आँगन दवाण पीड़ । किन्तवान,
आँखि धोतनि न२ जन डोलै डोल ।
फुलि गेन लैव केव अथव पन,
हम सैकलौ न२ धुनारै जन ।
रौग्या आएन लै कोला अमवि,
कडमळ क२ बहनी-बहनी कहवि ।
माते केननि रौरुजीक ध्यानाकर्षा,
आँगनमे आँखि ७ द२ बहना भाषण ।
सत दोष सावक लै दैत धियाण,
रयस तीस ह्रदा एथलौ अत्राण ।
बकत जमान रिजोचन मिननीमे,
सैनिक कत पडन छथि दिवनीमे ।
सबहोजिमँ पञ्चननि पीड़ ।क कान,
पहिन रौवि तेन डन पकका मान ।
माँ स२ कहननि नाँउ नर अंगा,
हिनका न२ जायरँ दड़ि तँगा ।
तिवसकाव कवरँ लै हएत उँटित,
कनिगाँ दवदसँ अति रिहँसित ।
कालि अछि रिखाह अहाँ जूनि जाँडु,
कलैत छी उँगाय लै यरँवाँडु
भोले 'ष्टमनु' जेता हिनक संग,
लै रिखाहमे क२ सकननि हूँदसंग ।
भाहक सासुव जेता चतुर्थीमे,
माह्र आदमे जागन हम अर्थीमे ।
लै रात कष्टन शीत छेलौँ सुलैत,
वाति रितन सुजनीमे कनिते कलैत ।
कोण रँदना जेनक रौगक साव,
अपन सकँठ रौगहन हमवा कपाव ।
मागीलँ हम लै टिणहि सकन,
भीतवसँ गल्लोव उँगव शीतन ।
लै जा सकलौँ हम रवियाती,
गाँरँ छी हूँक दुःखक गाँती,
भोले उँटि दड़ि तँगा जा बहलौँ,
लैक शोणितसँ नहाँ बहलौँ ।
पहूँचन डाकँठव मिसिब केव कनिनिक,
छक्क टिकित्सक सतसँ नीक
दुखारेपव कम्पाउण्डव नाम पञ्चन,
मागी सुपुव कहननि ७ कहव निखन ।
देखएमे भनपव रञ्ज रँनीव,



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

उंगवि मम लँसन, भीतर अवीर ।
रौणु मिसिब कहन ले दृष्टि दोय
दूहू अँथिअ देखे छथि कोस-कोस ।
लत्रक आगाँ ले अछि अन्हाव
हिनका नागन चश्याक रौंखाव ।
हम लिथि दैत जी शून्य गनास,
बूना दिगन्त हिनक विमलेशिक प्यास ।
ताहूँ जेँ ले तेती नीक,
अँथि सेकु रँनि मिलेली रँनि क२,
अधवगव दूसकी आगाँ अन्हाव,
कासन मम मोटि रिखाहक मनहाव ।
डाकूँव रँन२ केव ह्युगा ममसँ भागन,
एहेन मरीज भेटैत तँ ह्यरँ पागन ।
धूँरि गाम माता केव कवरँ नमन,
तोड़ू जगनी हमवासँ जेन रचन ।
चश्यासि लेन मायी छथि अति गदवन,
हमर योजना हिनक भउठपनमे उँडन ।

॥॥



आरुव जलनी

(बौव करिता)

सुति वद्ध हमार आन, अरु वैसि रीतन ।
अरु अरुववन लेनसँ आरुव तीतन ।

गोष्टि अरु अरुववन काष्टि बहनौ अरु अरुववन,
तात दर्शनक आशि छिन किअन अरुववन,
अरुववन रिसु दुद्ध ररुववन अरुववन ।
सुति वद्ध ।

कौन सिआहीसँ निखन रिवना हमार कगाव ?
अरुववन अरुववन अरुववन अरुववन हमार लेखा धाव,
टासन सन लेनाक हीन, अरुववन कासन ।
सुति वद्ध ।

हनुके की दोष दिअ अरुववन अरुववन अरुववन,
कायादीन रिवना रिवन कवधि अरुववन अरुववन,
अरुववन अरुववन अरुववन लेन शोषित भवन ।
सुति वद्ध ।

करुववन शोषिता आरु अरुववन अरुववन अरुववन,
कामपेवक सुधा भवरुववन अरुववन कण-कणमे
अरुववन अरुववन हमार कणपणामे उरुववन ।
सुति वद्ध ।

॥॥



अतिम छंद

(बौध करिता)

मात रैवथ केव जखनि रएस छन,
रिहूसन मस उज्ज्वल मकबन्द ।
एथलौ छग-छग हीगसँ उफलए,
माग जे रौजनि अतिम छंद ।
सुगु पुत हम छार्जि अरैनिकेँ,
जा बहलौ रिधना केव घब ।
अपन तातकेँ कोटा पकड़ू,
मानि जगनि शीतन आँचव ।
हमर चका धर निअ अहाँ प्रा,
ताम्र धवम केव बाथरँ माष ।
कर्म डगविपव हमर छुहँ मंग,
रैदरँ करैत पित्रक सम्मान ।
हंसराहिनी चकामे अवपित,
अपन शीमे दस सोथरँ त्रान ।
नीच रैष्टपव डेग ले बाथरँ,
जीरणमे कवरँ ले सुवापान ।
केहन दृष्ट अदृष्ट रियापि ज्ञ,
सभ किछु रूँउन अहाँ भेलौ दीन ।
हीन ले हाक ए अथिन त्ररणमे,
छुधि केतेक नान साधन रिहिन ।
अबुज अहाँकेँ हमर सगुगत छी-
रिओचमसँ जूनि रैहरँ लाव ।
शिखर नक्षत्रकेँ निश्चित साधर,
दैत माह्र सृतिक रोव ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हृषक दिय आशीय प्रतापस,
भेन धन, मन, जमे पूरित जीरन ।
रुदा माय' गृजन जेते स्वनि हय
रोम-रोमसँ उगठय फन्दन ।

॥॥



हृबहृब

(रौब करिबत)

दनाषक पाँजबि गमकि बहन डन,
गदबन गाड हूनन हूनराड ी ।
कात सँन कष्टी भवि नागन,
खसखस माग हबिखब तबकावी ।
रौरौ कमारैथि सीता थुनि-थुनि,
हमब हाथमे जनक गगवी ।
हूनक लेषमँ ओमन त२ क२,
खुरँ टिरौरौ गाजब ककवी ।
नदन गाड डन लारौ रँबहब,
अषाब शीबषण मधुब नताम ।
रिष अात्रा केयो पात जौँ डुरँए,
रौरौ डीनथि ओरुब टाम ।
दीर्घ पिगामित किड गाड कँपे डन,
ठाबि देलौँ भवि गगवी नीब ।
मल्ल पीठगब नागन चँकन,
उमडन रँखा जेन देह मिहबि ।
खमि पडलौँ कात पवतीमे,
तमकैत रौरौ नगननि दूकोबए ।
अडि उदसु दीर्घठैठी लषा,
हमब कोला रौत ल माष ।
पुल्लहीन अफनित गाडगब,
देनक सभठी जन उडने ।
नीक अवनो गप्पा रूमए ले,
तेसब कम्मामे टलि गेन ।
तनसाब आरि मायसँ गुडन,
लोचन डरँडरँ नामिका सुबसुब ।
आडुर्दि हूबमाएन डी कोल माड ी,
रौँ उग अषाथक नाम हृबहृब ।
मान जानसँ हूनराड ी रँचल्ले,
आडुर्दि पब मातक ओकवा रोपय ।
मागुत्री जिवातक उँपेकित मेरक,
खाद-पानि जेन केकवो ले ठैकए ।
लोषण जहाँनक अगरजी डी
सओष जनमान रँशोथे उँपठन ।
तीत पातमे पुल्ल थिनय ले,
उँगहासेमे जीरन रिपठन ।
लेष गज्जारेषिया गगवी भवि-भवि,



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जन्म देजौ हुबहुबकेँ रौबि ।
भोले-भोले रौबौकेँ देखन,
सज्जौकेँत कियारी पासनिमँ कोबि ।
करकय हीयमे शीति देखि क२,
सठ दौड़ि हुनका गव नगाँन ।
दलित उपेक्षित ज़ीरन रौँटेन,
श्रीछामँ लोव ठगकाँन ।

॥॥



अजनि

(बौन करिजा)

काका : सुति बद्ध अय रूँटी ओन,
पाकन परोव सन नागध जोन ।
ऊँसु ऋथ भँदिया थिथिवक रोम,
नाम 'अजनि' केतेक अणमोन ।

अजनि : माँ छँसु काका रँडका शीतल,
थागव मावि ठोके छथि काष ।
अहाँसँ घुका क२ टिररँथि पाव,
होडरँथि माथ रा तोडरँथि छँग ।

काका : भौजी ! जोठकी फुमि रँजे छथि,
बीतु सग भवि दिस हिन-रिन करे छथि ।
दरि बहन छी हिनक देह हम,
ऊँउँथन लेना करे छथि तम-तम ।

अजनि : काका जूनि योक मिथ्याक उँग,
आरँ ले सुतरँ हम अहाँक संग ।
माँ नग हमवासँ मिलेह देखरँत छी,
एकत पारि हमर छेपी दरँत छी ।

काका : पठा देरँ कालि अहाँकेँ हँसुन,
लणगण ओगठाँ भ२ जएत शीतल ।
ओतए भेष्टत ले खीवक थावी,
ले वसमलाग ले गनीवक तवकारी ।

अजनि : काकु रँगर हम रूँथियावि लेना,
सदिखन रँजरँ सुमबूव रगना ।
केकरो संग ले ऋह नगाधरँ,
अही नग बहरँ हँसुन ले जएरँ ।

॥॥



अहक आँचव

(बौब करिबत)

आरि रिसवर केना सुषु जलषी अहाँ,
केतेक निर्गम सेहँतित अहक आँचव ।
हीय सिहके जखनि रहे लोचन तखनि
लोब पोछलौं नपेष्ट हम अहक आँचव ।
केना अएलौं खनक ? मोन ले अछि कथा,
परित पष्टसँ सष्टन देह भागन लेखा ।
सिलह निह्यन अणमोन प्रथम सुनलौं माहुरौंन,
मोह मयाताक आन के कबत पबतव ?

दंत दूफक उगन, नीब पष्टसँ रहन,
देह ब्रुती भवन कँठ सरिता सुखन ।
जी करि दुन रिसरिस तारु अतुन ष्टसँष्टस,
झहमे नः चिरैलौं अहक आँचव ।

लना रयसक अरमल तोकए चनलौं हम त्रान,
कएलौं गणना अगुछ गुरु होडि देननि काण ।
सिलेष्ट राष्टपव पष्टकि माँक कोबमे सष्टकि,
तीतन कमनाक धावसँ अहक आँचव ।

देखि पाँचमेक हन माहुरीका सहन,
भान तिवपित हन ! उव ह्रुष्टा भवन ।
गेलौं केतए हे अहक केतए गेन आँचव,
ताकि बहलौं हम आँगनसँ पिपवक तव ।

॥॥



सुनिग्ध-सुराती

सिहिव-सिहिव ना हे पिया,
सिहिव-सिहिव ना !
सहबए सुनिग्ध सुरातीमे रँदवा,
सिहिव-सिहिव ना... !
पवम सुहारण मास रिबह हीय,
ठपकए लहक रूँल
नलित परणमे ठिठुँवि बहन जी,
जीरण भ२ गेन सुल
ठपकए रिबहक अश्रुनाग अ
सिहिव-सिहिव ना...
हृगति-तपित सित्तुआक कल्पना,
उपठन अरि तठ मोती
अहाँ रँदवाँ सिबस जीरणमे,
किए अगम दुःख मोती ?
सिनेक आनि काणए पेजसियाँ,
सुपुव-सुपुव ना....
काति शेरित माणिक्य रँगन,
मदमतु भेन गजबाज
रुग्ध जहाणक बहा प्रहबसे,
फहकि गेलौ हे ताज !
तोडु रेंदवाक डोवि अ
सगडा -सगडा ना..... । ।

॥॥



घष्ठा रसन्ती

कुकु केव मादक मरव सुनिते,
मिलहातुव मल चहकि उठल
उंगडुम आषण हबिखव काषण,
“घष्ठा रसन्ती” धाव रँहन ।
तितनी कणमूल नीवज्ज बससँ
केनक संप्रत सकन जहाण
अपण मलावथ सिद्धि करेजे
थेयसी कएन वृत्तवाजक गान ।
उमडा बहन नर तबनी यौरण
बसन्तात भेनि टटना-गात
पुष्प सेजपव गिनण समोहक
चतुर्थ गेन अछि दुषु गीत ।
जर्जव रूहा आ सुखन रूहमे
धुवि आएन पुनि काहक ज्ञान
भागि गेननि धर्मवाज देधि क२
मृत्तवाजक ज्ञा अणुपम शीन ।
हंस-धुनीसँ चन-अचन जीरण,
ताकि बहन होवी केव राठ
जड-चेतनक स्वभित काति देधि क२
केनक गान छुदैसँ भाठ ।
बंग-रिबंगक अरीव गनान संग
नाटि बहन उन्हादित होवी
सृष्टि मलाहव चक-चक तकरव
माँतन चह-चह चहुँदिस जोडि ।
टैतारवक आटे घाएन कनवर



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अग्निदेर केव जूआवि रैठन
घटेन जहाणमे कनकन ज़ीरण
मादकता स्रर्गेकेँ ज़ीतन । ।

ॡॡ



साहित्यक रिदुषक

किए हमवा कहे छी रिदुषक ।
की हम केहौं अहाँसँ थठेपठे । ।
शेरीर अङ्गण गाममे रित्रहौं
सभ ठाम देसिन गीत सुनहौं
मुड़न हो रा महूँक ।
मात्र रिदेहसँ बखहौं आशा
सभ दिन पढ़हौं मैथिली भाषा
ब्यावर्याता रँनि भेलौं चकमक ।
श्रीगाव पहबमे करिता निथे छी,
छी गृहसूत्र द्वाद रौवाग निथे छी
हमव जरीरुन दबससँ ओ भेलि भक् ।
कहिया धवि रौँठेरँ जागवाक पवटा
केहौं ले देखहौं अङ्गण चवटा
दक्षिण लेन भेल हकहक ।
दिनचर्या निथि करि रँनि गेना
आण्हव ग्वक संग रँताह टेना
ऊननु नग कोकिल ठकमक ।
केतेक दिन भवत रिनाप सुनहौं
होका डरँडरँ परिदे अमुनक ।
आँड-आँड दीर्घ सुनी भेदमे ठी दिख
हमजँ मैथिल गव नगा निख
रँगाँड मिथिनाकेँ समझक ।



रूदन जीरेँ डी

जीरणक डोबि हूँजि उँडन रूयोममे
कातव प्राण रूदन जीरेँ डी
सडन रसन गजडन अछि आंगव
गनन ताग गुदवी सीरेँ डी....
केकरो राड ी रेँनी हूँनाएन
केकरो पोथरि डेँके नारा
हमवा घबक पवथला गिनन भेन
आँटक रिना सुन्न अछि तारा
कागत-रूदालेँ रीड ी रेँना क२
कोठमँ लमि-लमि पीरेँ डी.....
मान वंग शोपित सन ठगकए
पीत फूँन गिनहा रेँनि धवकए
फूँपित होजिका डूँह देखारैथि
रेँड ीगव काक-तुसुआडी हरैकए
अगुनि देरक हूँथ डगिसँ
सुधालेँ खोडाँ-खोडाँ जडरेँ डी....
कठह रमत कहियो लेँ आरैथि
बाथथुँ अगल संग रिवाता
हसुमित बहे सरैक आँगन घब
हँमि-हँमि कोड ी खेनथि गुनीता
अपन सँत्रामकेँ हियामे वुका क२
सरैक सुथक कामला कलेँ डी..... । ।

॥॥



बया

साँस पहल दिप-राती दिस एलौ
बया नाँउ बखल छनि राँरी
मातृ कोवक हम पहिबक लेना
कोन-कोन ज़ीरन गीत गारी
खटक माटाष निमय रँनि चमकन
कनक-बजतसँ डगडग माता
पिताक रँधुआमे रँसननि नक्षत्री
कण-कण खह-खह कएन रिवाता
नर-रुने रँनि ज़ननीक कोथिसँ
दु-दु सावस आँगसमे थिनएन
तकल नतारै सनिग्ध देखि
सब समाज घुबथि गुनाएन
पेनकनि पाण्डू जव राँरुकेँ
लोकबी छोडि खँधव खसननि
खेत पथाव रियासि संग रूडन
तेयो तेसब लोकमे पँसननि
जेँ गुनती डन हगत पणिहवा
सुगंगा टुनङ्गीक चहचह मोव
झपलमे देरबाज ठपकेननि
शेवद-निशमे आगि गलहोव
हाथसँ कवटी कनम डूँठ गेन
छोडि गडननि भागिनी- भद्रा
चवण सुगुव धवा खनि धूँठन
आँगस राडि तवन दरिद्रा
काँट रँधुसमे सैथुमे सिनुव
गदगद बेनी मातृ सुनयना
कहुना नाज गेन दोसब घब
सुखद लोव खसरोँ छथि मयना
कँतक आँगस सेहो कब्रय बेन
जखल निकसन रज्जु चवण बज
लेन पटीसी संग मिलहक
महठी ह्योडि निगता पंकज
तुसासिक निम्ताव केना क२ कबितौ
उज्जव बुआ खानी हाथ
सैथुसँ सेनव अगल पोछतौ
आलहव सासु संग पीठै छथि माथ
आजूक डागल- कहियो डेरौ नक्षत्री
डहिसँ भागथि अहिरातिन सब



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

लोक घृत्तुं चिन्ताव निगे छी
केकरो मंग ले रौंठैर कनवर
कार-दृष्टि पेल छथि रौहव
टाषण ठोंग केल किछ लोक
आर्य तुरक लो रँगमाघ्य सभ
गर्दनि दारि पठैरए पबलोक
बाबैठा जेन मित्रम केहेन अ ?
रवन् एक तँ कहाएँ सती
अपन काँतारै छोडि यवमे
कहिया धवि तकरै अरना बति ?

॥॥



ऊँलठु-गुलठु

सरुवरी गायक सिलह ऊँलठुन डुबलुह,
गुलठु गेन डुबलुह- तात बास
तियागक सुवति सिया रूदलुह गेनी
प्रति नरु रूदलुह आठु-गास
रूतन सूरुवमे लुगु उगडुम
गुलठु रूदक लेन अरु अरु
ठुगु गलुलरुनलु सलुशुदु सैगु
कानुहा हेवथि आँडुव गंध
कानु दलुगुगुव वसुगुजुवु नलगुन
गुठु -लुख गुतु डेनलु अरुलुकारुवु
गुसक ठुगुकरु दलुगुकरु डुडुरु
नलुनरुतु रूक तुडु डुडु कलुवु
अलु-गलुनलु रलुनलु रलुनलु डुगुनलु
डुठु रलुनलु हेतुनलु रूशुओतुसुअ
सतु रूवुअनलु सलुशुगुगुनलु लेन
गलुजुगुलु शीत तुगुतु अगुलुसुअ
नलुगुवक डुव डुअरुठु रूनलु
तलुवलुतु नलुकरु डेठुनलु शलुनलुगुलु
गुओदलुनक सगु डेठु सँडु ले दलुगुलु
लुओकरुद सतु देतु तलुगु
गलुनलु डुलुगुलुमे हलुनलु डेठुनलु
वलुहलु दलुनलु सगु रलुनलुगुलु
रलुनलुकरु डेठु अलुनलु खुअरुनलुतलुनलु
अखुनलु ले डेठुतु डुनलु तुठु रलुनलुगुलु
डेठु गलुनलुवलुक लेन सलुगु सलुहलु
कलुतु डेठु नलुगुलु रूनलु अगुवतुगु
अरुगु डुलुगुलुमे सलुनलु गेन अरुडु
सलुहलुकुतु गलुनलुवलुक खलुखलु दलुनलु
सुकेलुनलुवलु वलुगुक गलुवलुक कठु
हलुथ डुअलु डुनलुक गतुलुवलु
अलुनलुतु हलुनलुमे डुनलु कलु डेठुनलु ?
सलुथ ललुखेनलुनलु डुलुतु डुवलु
सुवलुनलुवलु डुगुलु ठुगु डुरलुनलुक
रलुनलुनलु हलुनलुनलुक सगु वलुतु रलुतलुनलु
गुडुतु रूनलुक कठुअनलुनलु नैकलुनलु
सलुसुठुव सलुहलुनलु डुलुनलु कलुनलुनलु ।





करिक काफ़ा

पुत रँठरँठ रँशिक माग
रूदा पिपरौनिया रौरासँ
मंगनमि सपोतीक कपमे सुकण्या
अटा अपर्णा रा भरया
करि रँमि गेना पितामह
महन भेन करूना-पाती
भगरत प्रगा देख-
खुशीसँ हूननमि ज़ीसँ भाती
जेठका ज़ीरन मखरैत पाया
रियाहक भेन सोनहम रँवख
अखमि धरि- मिःसँतान
दोसव मिक्कपष्ट रूडा रँक
पर्वट पिभ्रमेरक अरिवाग
कवटी मग नकनक काया
बँग धन गर श्याम
घनश्याम कमियाँ कोवमे
मद्यः अएनी रँदेही रँमि कण्या
करिक उंगरण भेन धण्या
रूदा ! साझीक पिताक म्थान
जेठकेकेँ जेठैत
श्यामकेँ जेँ डग्हि रँग कहेरौक
मथ अमि रा दीर्घ पिताम
दोसव रँठीक जेन
बाखथु एकादशी उपास
मएह भेन
करि गेना मरझ
जेठममि रूकति भेनमि अंगरझ
साझीक माताक कोवमे
हएव रँठी रँमि अएनी भावती
रिचित अण्हेव
प्रपुत्रतिक हएव
अंगल अंगल अऊए नागन
गग्ग हवरिडवो
रँवमए नागन कनकुसकीक मष्ट
अंगल हाथसँ करिजी
बोपनमि रँरुवक कष्ट
रँडकी काकी दिख नगनमि तान



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ले छेनेनि हुनका समावक त्रान
करुनामे किएक मंगननि रौंठी
हम जौं हुनका सथाणगव बहितिगनि
तै जगमिते दारि देतौ
ए बाष्कसगीक यैँष्ट
रौंठीक जेन प्रार्थना !
आश्चर्य केहन करिक कामना
एकरैव आव अन्हैव
भादरक अन्हैवियाक हेव
मतरुं धुधि मभ कियो
देख करि फनक दमो
आँगनक रूँखामिन मभ
ठैमक अणन्या
कपाव छिष्टे नगनथिन
छेष्टको प्तोहूक कोबमे
जगमनि... कन्या
हा भगरण महात्माक यएह मान
मंगल देजियनि तीन
पुष्प मान मागन ह्याँष्टेमे
करि छुधि द्रुग्ध तननीन
जेना कहि बहन होथि
के बखनक जहानक मान ?
के रँट्टे नक फनक महान ?
के रँचेनक रंशि
मीता अहिन्या मारित्री
रा वारण कोबर कंस ?

॥॥



झकदा जगाड

गजोतमे तँ सभ छै छै
अबभावमे छल क२ देखाड
स्रान स्रनि पदटाप जगए
छचरी छठन झकदा जगाड
बृगक मीठ दर्द स्रनि रौबधन
पठबाणी-मत्री-सेनापति-टाकब
उग अबगन दिस के तकनके
जे सरि रिहिन जेकब देह जर्जब
भवन श्पेष्ट हाथी करैत
पहुँचन महाजन दुआरि जखल
स्रार्थक दुग्धसँ रँगन पयस
भवि थारी आगाँ बखलौ तखल
आँत छठछठ कँठ सुखन
पानि ले जे घोष्टि पारैए
स्रकथन अब्जोग मयमा जनकेँ
माँष्टि टँडान कहि भगारैए
देरधरनिमे निगुण राटक
पँचतत्र देहे भवन छै
पिबली ले कियो दैत उकवा
छुद्र फनमे उ जगमन छै
देर धर्मकेँ पीस बहलौ
मपष्टन मोन रौबि क२ रँठेबन
केहेन रिकवान मृगभृयाँ ग
सभ घोष्टि उम्मात जहब घोबन



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अतिम आग्रह ति थक स्वप्न लौक्या
ए ह्येवमे कथलो गडर ले
अगना मंग सभके जगएरै
अमास कहियो धवर ले । ।

॥॥



असतितरक थम ?

ककरासँ कहलै के पत्रिअते अगल तवंगमे बीजम दुनियाँ
रैड अथाह सरार्थक अर्पर ३ शुभ रैमि गेलै लोखण रैमियाँ
शोणित रौमि-रौमि छै छै रैलजौ
खब थोडा छै छै न२ गेलै
फाँटन आँटवसँ केना क२ सँगलै
खानी छिआब रैपद भ२ गेलै
र्यान दृष्टिसँ बाकस थुडकए टहूकि-रिडूकि क२ काणए बमियाँ
कर्मक बाहमे भेलै लोकलव
रौमे हापे पाणि उंगलजौ
भदरबिअमे पतरावि हेबाएन
दहिला हाथक नगगा रैलजौ
मउठौ आँडुव पाणि खा गेलै, केना रैजते दर्दक हवझमियाँ
कडुबमे मियनारि उंगल छै
थनथन पाँक पएव धँसि गेलै
अन्हाव मोमिमे कडुमडु क२ बहलौ
रिग्न जाले छैगड १ सँसि गेलै
केना क२ हमबा रौहव कवते लाव चाँ छै हहवए मोममियाँ...
किडु छिदीक तवमे दरि क२
पदह अ ला अकसक क२ बहलौ
भावी भेल अकर्मक मोती
ओकले धावमे गंगा रैलजौ
घनन दबिदा ताँडर कवते,
असतितरक- थम रैगन पौजमियाँ..... ।

॥॥



झगप्रभा

सभ दिन सर्द
कियो ले रौपद
देह सिहकन लेह ठिठुवन
शोथवि-गनाव ठमकन
गुम बगकन
श्याम अमर्ष शीतक रीट
ठक ठक कएल आनि
कथनि भवत मोषक श्याम
करदरौत चम्पा क्रमकेत पनाशि
सूर्यक्षीक दशो देखि
ओकबसँ किअ कबेत छी मिलेह
जे अन्तीकेँ ठकि जेनक
ओकब कौमार्य नयष्ट क२ देनक
आग आगिक ठेगपव
के कवत रिसराम ?
माँपु मर्यादा रैटाँ गेह
भारक आगाँ प्राणतिक कोष मोजव
एतरोमे मेघ उँडाँ गेन
शीत ब्रुत भेन
झगप्रभा रैनि बरिह अरिस
सूर्यक्षीक,
कोमन कोपवमे समा गेन
ज्योतिर्पुञ्जकेँ आदित्यक चषा मनि-
सूर्यक्षी अपन मैथुमे
भस्मीभूत क२ जेनी
अखण्ड सौभाग्यरतीक आशीयक संग
किवण समवन
कनी फुल रैनि पमवन
हम तँ उँतय रिगी छी
ले बहिनो तेयो कबितियनि
सुकजसँ प्रेम..... ।

सभ किअ दैत छी हूकापव दोथ
ले दुमेत छथि ले उँलैत छथि
सभ पिण्ड घुमि-
हूकापव दुमि जएरौक
कर्क नगरौत अछि-
जखनि अगनामे दृढता ले



तौ दौसवपव दौय केहेन ?
रिग्न रौजौल मत्त नग अरौत छुथि
आठौ गाम जलैत छुथि
अन्ती मत्त जलैत किअ
कएनी रवण-
ज्योजिगुजकेँ रौणहर
ककवासँ भेन मत्त ?
आदित्य मिलहक तागस
नगले तगुत, नगले रिदुग
केना भेना छुथिया ?
मिलहक अर्थ सुधि प्रतुंजन
ले सगुनि
एकव ले अरमाण
ले उतुकर्य..... ।

अणप्रता जेकवापव खसन
ओ जवन ओ मरन
दुदा ! मिलहक अणप्रता
रामणा मात्र ले-
निशिरत सगुदल..... ।

जेकवामे केनक प्ररेशे
ओकवा रोम-रोम शैय-अशैय
एकव तुंगिया रहह कहत
जेकवामे सरैदणा बहत..... ।

॥॥



सगव बति दीग खब

बाति माले काबी पहव
गत्र-गत्र शीत
ज्जीर अज्जीर आफात
बज्जीक नीनासँ
झुकीक रौचरौक जेन
लोक खबरेछ दीग
सत्ताताक विकासक संग-संग
मसुख चेतनशील होगत गेन
पहिले गज्जोतक जेन..... ।

खब-पुखाब जावनि
मत्ता बुखा यष्टी
सूत डोडा कगलक रौती
टिरेड ीक रौदना जेम्प
रौकैत बोशिलीमे गलैत पवाती
बुद्धिक विकास जेन..... ।

रिद्यूत तबंगमे
लौसक उंगमे
रिक्लोनक जग भ२ गेन..... ।

सभ ठाम गज्जोत
रुदा ! रौदेहीक घर अण्हाव
मात्र निखते बहर
केकरोसँ ले कहर
के बुमत कथाक विकास
केकरो ले छन आभास
दवीटि रौनि संगह लेल
आरि गेननि
मैथिली कथा जगतमे प्रभास
सुबज्ज दिन भवि अण्ण
कलेजकेँ जड । क२
ले मेठी सकन
ए रसुण्णवापवसँ
रिगलित माण्यक प्रवृत्ति
प्रभास दीग रौवि
अण्ण ककआरि सम्लारि



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कथा मागवक जमन तवंगमे
दिश्र नगननि हिनकोव..... ।

समाज जागत- ग्रा छन रिसरास
रूदा ले आदि भेष्टननि
ले भेष्टननि ढोव...
किणछेविगव अगमियाँत
कथाकाव न२ जेननि निरर्षी
जागवणक आशिये
कहियो तँ सुखतनि
रैदेहीक महेरीत लाव..... ।

चलि गेना अतिनाया लले
उंतवाधिकारी सभ खेनागत छथि
अष्टी रँज्जव करिया-मूमरि
उद्यत छथि अधिकार हवरौक जेन
पाग पहिबरौक जेन
सगव बाति दीग जवए..... ।

कषा कषानन्द- आनन्द रिभूति
गेकषा गव नगौल छथि
मर्गिया महेन्द्र
ममनद पजिणल छथि
समालोचक- उद्वयक सूतए
मात्र राचक मट टिकवए..... ।

कहेत छथि रूठ डी
तखनि गौघर्षीमे अरि
षाँठक कवरौक कोष प्रयोजन ?
दीग रौनि दूषावि ले जवाँ
जे जगदीश जागन बहत
ओकर गायक जिनगी के सुनत ?
ओ अडि समाजक कात
कहियो होमए देरै
ओकर साहित्य साधनाक प्रभात
किएक तँ ओ डी रेमात्र
जग माँठिक अन्हावकेँ
सुबज ले हँषी सकन
ओ केषा हँषत माँठिक दीगक रँन ?



मानुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जौ दृष्टिकोशमे बहत छन
तँ बिरलक केषा बिर्मल ?
उग कठकोकाबि सरलक रीट
मैथिली छथि दूरकन
सगब बाति दीप ज्वल
अबहाव घब समकाव सडए
कथामँ केषा गावस बिकसए ?

॥॥



कर्मयोगी

ले भगता योगी आ ले डनरौह हवथक तबंग ले,
ले रिपत्तिक आह पहिबुक दर्शन कहिया भेन ले
अछि मोन जहियासँ देखेत छियनि रूपह गँतीव झूझी ..
केकरो उंगहाम ले केकरो परिवहाम ले, ले
ठोवपव रसभुक गान ले
हिअमे ग्रीष्मक मसाम
लना सभक प्रिय अध्यागक कर्मयोगी-
अपकन केना भेननि पितामह टुकि ?
वीतिक कानधुकथक नाँउ- कामदेर ! ! !
कोला ले काम भनमाग्य निश्चाम
तेसब पहवक रिमणीक रौद
जगतप्रात्रीक निवक दर्शन
ताममामक गाममे बहिते
विर्गुडसँ झुञ्झुङ्ङक हाथे
तर्पण आरि की मँलौत छुथि रौरा ?
मरबन आँगनमे शक्ति सहचरी
जाग बरि-शिकि किबार्के आमैनात
कबरौक जेन लोक करैत अगज्ञान प्रनाग
बार्थ फुटिचालि बटैत
टोवि क२ आउरव करैत
तनयक कपमे ओ दूनु
रौराक आँगनक श्रैरणी फुमाव
“अचना” टटना रनि देननि
कन्याक उंगहाव
दुःखक मोतीमे जखनि अफनागत
छै मन्त्रथ तखनि आस्तिककता जलौत
भूथ झुदा ! तिवपित रौरा ले करैत छुथि
भगवानसँ डन, स्वामे जेन मन निवमान....
समाजमे छुहि शीतनताक आह
सदेह करि ले तखनि रोदेहीक चाह ?
अगल लपथामे बहि
बाठकक कएननि निर्देशन
दसिन रसनाक प्रति कर्मक गति अर्पण
एकाध प्रहसन निधि अकथा करिता गठि
केतेक आजाद भ२ गेन चिहाव झुदा !
गजोतक स्नात तक पिबली अह्वार
कोला ले छुहि छोह सरहक
उकेर्य हूअ यएह आशि,



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

यएह मोह की खोला की अछोप
की धातुक की गोप सरहक रौरा.....
जग गाढक छिं छहवि रएह उर्तुग
रएह श्रेण मिकरुट हूअ रा नवकठ
स्त्रिकाव करैए पडतनि समाजकेँ
रौरा मन चेतनशील मखथकेँ
जे संकाव नुष्टारैए सरहक कन्याणक जेन
अनुमर्माँ मोहव गारैए..... ।

५५



एकठा छेनी आवती

एकठा छेनी आवती
भदमक भावती
आगाँ 'वाय की नागन
ओ सब रूमि गेनधि
किछ आव
रिदुग रा होशियाव
डनमि खड म देरौक आशि
भदमक काता
महा भदममे छुथि-
हूका पड गण नागि गेन डनहि
आष किथ ज्ञात
केना पड एत
किन्नी ले होमए देनक
रुक्तक कार्याक आशि पुव
कियो ले गेन भागनपुव
आवती कमि गेनी
झरि कि ले
अन्तव-आत्मासँ छुमि गेनी
झँहजोड भायामे
जे बाखत आत्मासँ
रिदेह-तन्त्रजामँ मिलह
आत्मासँ गेह
सरहक हएत रएह दनी
भागेथ पडतनि
उत्तवारिकाबीकेँ कनेमि
सभ दिनक जेन रिना देतनि
जहानसँ भगा देतनि
मात्र हमही ठी नाचरै
हमही देखरै
के सुतन के जागन
के ले रूमए
जे कवत थगाम
ओ भ२ ज्ञात अभागन
एँ माष्टिसँ उगठन रैदेहीकेँ
आष भूमिक लोक
माष्टिमे गिना देनमि
रुदा अगण आवतीकेँ
अगल सांगह खना देनकनि..... ।



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

॥॥

(प्रसिद्ध लेखिका सूर. डा. खावती रुपाबीके समयपित...)



सुखाव

कान बहसन त्राम रँहकन
मधुमासे सत्राम महकन
श्रयाठ हफित गण्डे कमन
जन रूम रिष रिआ रिहूमन
आर्डा चहकन खेत दडकन
प्रशोणतक प्रकोपे मनसुन सबकन
मोहित कनकन जूआणी गबकन
बोहिणी-आवदवा सुखजे बमकन
“ग्लोरिन-रार्डिंग” हफकन
झुर्रैष प्रप्रति मनकन
रिज्ञानक चमत्कावमे उँदुआराम डुणकन
गाडु काँष्टि हेषव जेन रँललौ
पहिले किए ले नरगडुनी नगेलौ
अपल गतिक सृष्टेयविग पकडलौ
मज्जुव किसानकेँ घर रँसेलौ
प्रधि प्रधान देमेमे लोवक सहात
आँथिक मोहितसँ केषा बीजत पात ?
एँ रँव सुखाव साँडला रीतन
दीनक आत्मा तीतन
भदैया रूँडन बरँरीक कोण आशि
सुखन ह्रुवदैया मकमन काम
अगिना मान गुँत रौठि
देलौ खेतिलवकेँ तार्डा ?
राह रौ रिज्ञान राह रौ धमाम
रिष हथियारे जेलौ गरीरँ-गुवरक ज्ञान
जेकव भ२ सकए मनयन आ रिघठन
आहुरेदमे तग बसायनक चर्चा
रिज्ञानक रौठि मे सगरो पोलिथिन
कागत जोर्डा रौँष्टि बहलौ पनामष्टिकक पर्चा
आजूक बसायनसँ माँष्टिक कोथि उँजडन
रूँष्टि डँष्टि किडु ले मज्जडन
पनामष्टिक जोर्डा मिअ जूँठक रौवा
पोलिथिन ले ठौंगा-नोवा
जोड रौ धाचकव
एडभासुन रँनरौक चकव
पकडए अपन रौंग-पुखुआक देन हथियाव
धले मोनिक समकाव
केमिकनसँ नहा तँ जेरौ



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रूपा ! की टिखें... ?

॥॥



गजव १

कानवात्रिमे महमह दिसमान केना आएत
मोषमे पाप सरबन भगराण केना आएत

ले जड् थ्राण राह्य मबन सबन देह सग
अधम नीटाँ खसत धर्म गगणमे रिनाएत

माँम आँगल कष्टक रौण ले रोगु त्रियतम
काग कोगनी सन कोमन सताण केना पाएत

रिबह मासमे ले मोहव मोहनगव नली डै
कठमे पित्त चउठन मधुगीत केना गाएत

अगले कक बाम नीना लेना दुध रिस कानए
कर्मतीक प्रकथकेँ जयकाव कहण हएत

॥॥



गजव २

कइ को रौत हम मानिनि कबुय भ२ गेल अछि अर्षण
केना महरूँ अखन कँठक दरेँ छै थीसतव तर्षण

सोहारौँ लेँ खुशी सबगम समाजक हम पबिनस्रित
धुँलेँ छी देन कानक गति गदवारौँ लेँ रिकम जरीण

गतित नियति आफन भेलै जडन अर्षण तवंगे छै
सूतन अगि मभ पंथक एतै समभारमे सिचनण

रौहवसँ जे जउत गुमसुम हिआसँ ओ ओते रिखधव
टाणष रौहलेँ उँयाकाले राह रौ जहाणक मर्कर्षण

भेठन जेकवा जेतए अरसवि हाथ धोनक हनानीसँ
नीतिक मटगव चर्रा ते करै माँष्ट लेह प्रति गर्जन

॥॥



हांगकु

सूतन जग/ दिनकव नानिमा/ जगा देनक
वरिक नानी/ अ सूतन जहाँके/ जगा देनक
रैथीक रौद/ खरखर पागल/ रसुवा ह्यु

॥॥

विदेह नूतन अंक भाषापाक बचनानेखन-

अहिमिकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-अहिमि- प्रोजेक्टके आगु रैठ डि, अगल सुमार आ योगदान अ-
मेन द्वारा ggaj_endra@videha.com पब पठाडु ।

**१.भावत आ लपावक मैथिली भाषा-रैठानिक लोकनि द्वारा रैठाओव मालक मीठी आ २.मैथिलीमे भाषा
सम्पादन पाठकेय**

१.लपाव आ भावतक मैथिली भाषा-रैठानिक लोकनि द्वारा रैठाओव मालक मीठी

१.१. लपावक मैथिली भाषा रैठानिक लोकनि द्वारा रैठाओव मालक उँचाका आ लेखन मीठी

(भाषाशास्त्री डा. बामारताव यादवक धाकाके पूर्ण कर्गसँ सम्म नः निर्धारित)

मैथिलीमे उँचाका तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षराव: पञ्चमाक्षरवास्तुजात ७, ए३, ण, न एरि म अरैत अछि । संयुत भाषाक अक्षराव
मैथिलीक अक्षरमे जाति रक्षक अक्षर बँहैत अछि ७री रक्षक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अरुँ (क रक्षक बहुरीक कावशे अक्षरमे ७ आएन अछि ।)

पञ्च (च रक्षक बहुरीक कावशे अक्षरमे ए३ आएन अछि ।)

खल (छ रक्षक बहुरीक कावशे अक्षरमे ण आएन अछि ।)

सञ्चि (त रक्षक बहुरीक कावशे अक्षरमे न आएन अछि ।)



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

खसु (ग रक्षक बहुरीक कावणे अस्तुमे म् अथन अडि ।)

उपह्रास रात मैथिलीमे कम देखन जागत अडि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अरिकाशि जगहपव अक्षरावक प्रयोग देखन जागड । जेना- अक, पट, खड, सधि, खंत आदि । राकवणरिद पण्डित गोरिन्द नाक कहरी छुनि जे करखा, चरखा आ ठरखामे पूरि अक्षराव लिखन जाए तथा तरखा आ परखामे पूरि पञ्चमाक्षरले लिखन जाए । जेना- अक, टटन, अडा, अस्तु तथा कम्पन । हुदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रातकेँ बहि मालेत छथि । ओ लोकनि अस्तु आ कम्पनक जगहपव सेहो अत आ कम्पन लिखेत देखन जागत छथि ।

बरीण पक्षति किछु सुरिवाजणक अरुष्ट छैक । किएक ठँ एहिमे समय आ स्वाणक रैचत होगत छैक । हुदा कतोक रैव हस्तलेखन वा हुदामे अक्षरावक छोट सन रीन्दु स्पष्ट बहि बेनास अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अडि । अक्षरावक प्रयोगमे उँटाका-दोषक समुारणा सेहो ततरै देखन जागत अडि । एतदर्थ कम न२ क२ परखा धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरि उँटित अडि । यम न२ क२ उँ धरि अक्षरक सङ्ग अक्षरावक प्रयोग कवरिमे कतहु कोणा बिराद बहि देखन जागड ।

२.ठ आ ठ : ठक उँटाका “व ह”जकाँ होगत अडि । अतः जत२ “व ह”क उँटाका हो ओत२ मात्र ठ लिखन जाए । आष ठाम खाली ठ लिखन जाएरौक चाली । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउँआ, ठस, ठेरी, ठाकनि, ठाँठ आदि ।

ठ = गढाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरौ, साँठ, गाठ, बीठ, टाँठ, सीठ, पीठ आदि ।

उपह्रास शिष्ट, सभकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत अडि जे साधाकातया शिष्टक मुकामे ठ आ मया तथा अस्तुमे ठ अरैत अडि । गह निगम ड आ डक समुर्त सेहो नागु होगत अडि ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उँटाका रँ कएन जागत अडि, हुदा ओकवा रँ कपामे बहि लिखन जाएरौक चाली । जेना- उँटाका : रँखनाथ, रँद्या, बरँ, देरँता, रँष्टु, रँशि, रँदना आदि । एहि सभक स्वाणपव फ्रमिः रँखनाथ, रँद्या, बर, देरता, रँष्टु, रँशि, रँदना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उँटाकाक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अडि । जेना- ओकीन, ओहन आदि ।

४.य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उँटाका “ज”जकाँ करैत देखन जागत अडि, हुदा ओकवा ज बहि लिखरौक चाली । उँटाकामे यरु, जदि, जदना, जुग, जारँत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जाएरौना शिष्ट, सभकेँ फ्रमिः यरु, यदि, यदना, यग, यारत, योगी, यदु, यम लिखरौक चाली ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अडि ।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, लेखत, माए, भाए, गाए आदि ।

बरीण रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सामान्यतया शिष्टक शुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सभक स्त्राणपव सहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग बहि कवरौक टाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शिष्टक आवस्थामे “ए”केँ य कहि उँटावण कएन जागत अछि ।

ए आ “ग”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पद्यतिक अङ्गसवण कवरै उँगहाउ मणि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुबुक लेखनमे कोना सहजता आ दुकहताक रीत बहि अछि । आ मैथिलीक सरिसाधारणक उँटावण-शैली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएरँ आदि कतिपय शिष्टकेँ केँन, हेरँ आदि कएमे कतहु-कतहु निखन जाधरँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीप प्रमाणीत करैत अछि ।

७. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पत्रसवामे कोना रीतपव रँन दैत कान शिष्टक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अणभहु, ओकवहु, तकोनहि, टोष्टहि, आणहु आदि । झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्त्राणपव एकाव एरँ हूक स्त्राणपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अणला, तकाले, टोष्ट, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अरिक्शितः यक उँटावण थ होगत अछि । जेना- यडल्ल (थडयल्ल), योडशी (थोडशी), यष्टकोण (थष्टकोण), बृषेनि (बृथेनि), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

+. ध्रुमि-लोग : निम्नलिखित अवस्थामे शिष्टसँ ध्रुमि-लोग भ२ जागत अछि:

(क) फ्रियाल्लयी प्रत्य अगमे य रा ए वृथु भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उँटावण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ लोग-सूटक छिन रा रिकारी (/ २) नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतोक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उँठ पडतोक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उँठ२ पडतोक ।

(ख) पुरिकानिक प्रत आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृथु भ२ जागछ, झुदा लोग-सूटक रिकारी बहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरँ, बहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरँ, बहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य गक उँटावण फ्रियापद, सँका, ओ विशेषा तीषुमे वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसवि मारिनि छनि गेनि ।

अपूर्ण कप : दोसव मारिनि छनि गेन ।

(घ) रतिमान प्रदन्तुक अन्तिम त वृथु भ२ जागत अछि । जेना-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पूर्ण रूप : पठित अछि, रोजेत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण रूप : पठे अछि, रोजे अछि, गरै अछि ।

(७) फ्रियापदक अरसाण गक, उंक, एंक तथा हीकमे ब्रुतु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण रूप: डियोक, डियेक, डलीक, डोक, डैक, अरिठेक, होगक ।

अपूर्ण रूप : डियो, डियो, डली, डो, डै, अरिठे, होग ।

(८) फ्रियापदीय प्रत्यय ह, हू तथा हकावक लोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण रूप : डहि, कहनहि, कहनहूँ, गेनह, बहि ।

अपूर्ण रूप : डनि, कहनि, कहनौँ, गेन२, बग, बघि३, ले ।

९. ध्रुमि आनासुवा : कोला-कोला सुव-ध्रुमि अपना जगहसँ हष्टि क२ दोसब ठाम टनि जागत अछि । खाम क२ ज्ञान ग आ उंक सङ्ग्रामे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवा भ२ गेन शिष्टक मवा रा अस्तमे जूँ दानु ग रा उँ आरैए तँ ओकव ध्रुमि आनासुवित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- मेमि (मेगम), पामि (पागम), दामि (दागम), माष्टि (मागष्टि), काडु (काडुड), माम् (माडम) आदि । द्वाद तसेम शिष्ट, सभमे ग निखम नागु बहि होगत अछि । जेना- बमिके बगम आ सुवागिके सुवाडम बहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनसु ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनसु ()क आरंभकता बहि होगत अछि । कावण जे शिष्टक अस्तमे अ उँटावण बहि होगत अछि । द्वाद संस्कृत भाषासँ जहनाक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिष्ट, सभमे हनसु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया संपूर्ण शिष्टकेँ मैथिली भाषा सङ्ग्रही निखम अङ्गसाव हनसुरिणीष बाखन गेन अछि । द्वाद र्वाकवण सङ्ग्रही प्रयोजक गेन अवारंभक आनपव कतहू-कतहू हनसु देन गेन अछि । प्रसूत पौथीमे मैथिली लेखक प्राटिन आ नरीन दनु शैलीक सवन आ समीटिन पक्ष सभकेँ समेटि क२ र्प-रिगाम कएन गेन अछि । श्ल आ समयमे रँचतक सङ्ग्रहि हनु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरंरना हिमरसँ र्प-रिगाम गिनाउन गेन अछि । रतमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक लेखन लेरं२ पडि बहन परिश्रेष्ठमे लेखनमे सहजता तथा एककतापव धाम देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन विशेषता सभ फुटित बहि होगक, तादु दिस लेखक-मंडन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक कहबँ डनि जे सवनताक अङ्गसङ्गामे एहन अरंभ किम्व हूँ आरं२ देरौक टाली जे भाषाक विशेषता डहिये पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक धाकाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग न२ निर्धारित)

१.२. मैथिली अकादमी, षठ्ठा द्वाव निर्धारित मैथिली लेखन-गेव

१. जे शिष्ट, मैथिली-साहित्यक प्राटिन कानसँ आग धरि जाहि रतनीमे प्राटनित अछि, से सामान्यतः ताहि रतनीमे निखन जाग- उँदहवणार्थ-



ग्राह

एथल

ठास

जकब, तकब

तनिकब

अडि

अग्राह

अथल, अथनि, एथल, अथनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकब, तेकब

तिलकब। (रैकपिक कर्पे ग्राह)

अड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्प रैकपिकतया अगनाउन जाय: भ२ गेन, भ३ गेन वा भ४ गेन। जा बहन अडि, जाय बहन अडि, ज४ बहन अडि। कब गेनाह, वा कबय गेनाह वा कब४ गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनि स्थानमे 'ण' लिखन जाय सकैत अडि यथा कहनि वा कहनिह।

४. 'अ' तथा 'उ' ततय लिखन जाय जत 'अ' तथा 'उ' सद्भी उच्चारण गथ्र हो। यथा- देथेत, डलैक, रौंथा, डौक गलदि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि कर्पे अगना होयत: जेह, सैह, ग४ह, उ४ह, जेह तथा देह।

६. सद्भी अकारांत शब्दमे 'ग' के अक्षर कबरी सामान्यत: अग्राह थिक। यथा- ग्राह देथि अरैह, मानिनि गेनि (मन्त्रय मात्रमे)।

७. स्वतंत्र अक्षर 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण अदिमे 'ँ' यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कर्पे 'ए' वा 'य' लिखन जाय। यथा:- कयन वा क४न, अयनाह वा अ४नाह, जाय वा ज४य गलदि।

८. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वत: आरि जागत अडि तकरा लेखमे स्थान रैकपिक कर्पे देन जाय। यथा- धीथा, अ४थेथा, रिथाह, वा धीया, अ४थेया, रिथाह।

९. सामान्यक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'अ' लिखन जाय वा सामान्यक स्वर। यथा:- मै४ग, कनि४ग, किवतनि४ग वा मै४था, कनि४था, किवतनि४था।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कर्प ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' 'मे' अक्षरवा सरथी लज्जा थिक। 'क' क रैकपिक कर्प 'केव' बाखन जा सकैत अडि।

११. पुरिकालिक फ्रियागदक रौद 'कय' वा 'क४' अरय रैकपिक कर्पे नगाउन जा सकैत अडि। यथा:- देथि कय वा देथि क४।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि लिखल जाय ।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क रँदना अस्माव नहि लिखल जाय, किंतु ङाणाक स्वरिपार्थ अर्द्ध 'उ', 'ए', तथा 'ण' क रँदना अस्मावो लिखल जा सकैत अछि । यथा:- अर्द्ध, रा अर्क, अखजन रा अचन, कर्ष रा कर्ठ ।

१४. हर्गत छिन निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सभ एकन कावक छिन मोहमे सँ क लिखल जाय, हँ क नहि, सँहञ्ज रिभञ्जिक हेतु हर्वाक लिखल जाय, यथा घव पवक ।

१६. अस्मानिककेँ चन्द्ररिन्दु द्वारा राञ्ज कएल जाय । पर्वत ऋद्राक स्वरिपार्थ हि समाज जर्जन मात्रापर अस्मावक प्रयोग चन्द्ररिन्दुक रँदना कएल जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१७. पूर्ण रिवाय पामीसँ (।) मुचित कएल जाय ।

१८. समाप्त पद सँ क लिखल जाय, रा हाङ्गफेसँ जोडि क , हँ क नहि ।

१९. लिख तथा दिख मोहमे रीकावी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अर्क देरणागवी कएमे बाखल जाय ।

२१. किछ भ्रमिक लेव नरीन छि रँदनाओव जाय । जा अ नहि रँदना अछि तँरित एहि दुनु भ्रमिक रँदना पुर्रित अया/ आया/ अया/ आया/ आओ/ अओ लिखल जाय । आकि ए रा ओ सँ राञ्ज कएल जाय ।

ह.- लोारिन्द मा ११/१३ लोिकाञ्ज अरुव ११/१३ सुलेन्द्र मा सुम ११/०१/१३

२. मैथिलीमे भाषा संपादन पाठकेय

२.१. उँचावा निर्देशः (रोल्ल कएव कए ज्ञाह):-

दनु न क उँचावामे दाँतमे जीह सँठत- जेना रोजू नाय, ऋदा ण क उँचावामे जीह मुर्धामे सँठत (ले सँठैए तँ उँचावा दाय अछि)- जेना रोजू गणेशि । तानरा नेमे जीह तावुसँ, यमे मुर्धसिँ आ दनु समे दाँतसँ सँठत । निगाँ, सभ आ मोया रोजि कइ देखु । मैथिलीमे ष केँ रैदिक संस्कृत जकाँ अ सेनो उँचवित कएल जागत अछि, जेना रयाँ, दाय । य अलको स्थानपर ज जकाँ उँचवित होगत अछि आ ण उ जकाँ (यथा संयोग आ गणेशि संज्ञाँग आ

पडसे उँचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उँचावा रँ, ने क उँचावा स आ य क उँचावा ज सेनो होगत अछि ।

ओहिना दनु ग रेशीकान मैथिलीमे पहिल रोजन जागत अछि कावा देरणागवीमे आ मिथिलाक्षरमे दनु ग अक्षरक पहिल लिखला जागत आ रोजला जएरौक चाली । कावा जे हिन्दीमे एकव दायपूर्ण उँचावा होगत अछि (लिखल तँ पहिल जागत अछि ऋदा रोजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक दायक कावा हम सभ ओकर उँचावा दायपूर्ण ठगसँ कइ बहल छी ।

अछि- अ ग ङ अँठ (उँचावा)



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

छथि- छ ग थ छैथ (उँचाव)

गहूँटि- ग हूँ ग ट (उँचाव)

आरौ अ आ ग ज ए ँ उ ठ अं अः म ँ सत जेन गात्रा सेहो अछि, दूदा एंसे ज ँ उ ठ अं अः म केँ सहायक कगमे गत कगमे प्रयुक्त आ उँचवित कएन जागत अछि। जेना म केँ वी कगमे उँचवित करौं। आ देखियौ- एं जेन देखिउ क प्रयोग अछि। दूदा देखिउं जेन देखियौ अछि। क सँ ह धरि अ समिलित तेनासँ क सँ ह रँलैत अछि, दूदा उँचाव कान हनुप्र युक्त शिष्टक अत्रुक्त उँचावक प्रवृत्ति रँठन अछि, दूदा ह्य जखन मलाजमे ज अत्रुमे रँजैत छी, तखना प्रकाका लोककेँ रँजैत स्वरँहि- मलाज, रासुरमे उ अ युक्त ज = ज रँजै छथि।

ह्यव क अछि जू आ ए क सहायक दूदा गत उँचावण होगत अछि- गा। ओहिना अ अछि कू आ य क सहायक दूदा उँचावण होगत अछि छ। ह्यव नै आ व क सहायक अछि श्री (जेना श्रीमिक) आ म आ व क सहायक अछि म (जेना मिस)। ए जेन त+व।

उँचावक अँडियो फागन विदेह आर्कागर <http://www.videha.co.in/> गव उँगन अछि। ह्यव केँ / सँ / गव पूरि अकबसँ सँ क लिखू दूदा टँ / क रँ लँ क रँ। एंसे सँ ये गहिन सँ क लिखू आ रँदरँना लँ क रँ। अकक रँद रँ लिखू सँ क रँ दूदा अत्रु रँग रँ लिखू लँ क रँ जेना

छसँ दूदा सत रँ। ह्यव उअ म सतम विभू- छरँम सतम लँ। घवरँवमे रँव दूदा घवरँवमे रँव प्रयुक्त करू।

बहए-

बह दूदा सकेए (उँचाव सकेए-ए)।

दूदा कथला कान बहए आ बह ये अर्थ तिलता सेहो, जेना ने कया जगहमे पाकिंग कवरौक अत्रुस बहँ उकरा। पृष्ठनागव गता नागन जे दुगदुग नामा जे ड्रागन कगठ हसक पाकिंगमे काज करौत बहए।

दुलै, दुलए ये सेहो एं तवहक जेन। दुलए क उँचावण दुल-ए सेहो।

संयोगल- (उँचाव संयोगल)

केँ/ क रँ

केव- क (

केव क प्रयोग कगमे लँ करू, कगमे क रँ सकेँ छी।)

क (जेना बायक)

बायक आ सँग (उँचाव बाय के / बाय क रँ सेहो)

सँ- स रँ (उँचाव)

चन्द्ररिन्दू आ अत्रुस- अत्रुसमे कँठ धरि प्रयोग होगत अछि दूदा चन्द्ररिन्दूमे लँ। चन्द्ररिन्दूमे कलक एकावक सेहो उँचावण होगत अछि- जेना वामसँ- (उँचावण वाम स रँ) वामकेँ- (उँचावण वाम क रँ/ वाम के सेहो)।



केँ जेना बागकेँ भेन हिन्दीक को (बाग को)- बाग को= बागकेँ

क जेना बागक भेन हिन्दीक का (बाग का) बाग का= बागक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (बाग से) बाग से= बागसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते टाक मोड़, सरलक प्रयोग अरुद्धित ।

के दोसब अर्धे प्रशङ्क भ२ सकेए- जेना, के कहलक ? रिभक्ति “क”क रँदना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

नघि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ ए सभक उच्चारण आ लेखन - ले

ओर क रँदनामे ह्र जेना महव्रपूर्ण (महोव्रपूर्ण ले) जतए अर्थ रँदलि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक सँशुद्धाक्षरक प्रयोग उचित । सम्पति- उच्चारण स स ग त (सम्पति ले- काका सही उच्चारण आसागीसँ सञ्चर ले) । ह्रद सरोतिस (सरोतिस ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोडिये/ पोडि लेन/ पोडि लेन

पोडिये/ पोडि/ (अर्थ परिवर्तन) पोडि/ पोडि

ओ लोकनि (ठी क२, ओ से रिंकावी ले)

ओग/ ओहि

ओहिये/

ओहि लेन/ ओही व२

जवरोँ रँसरोँ

गँचज्याँ

देखियोक/ (देखिओक ले- तहिना अ से ज्ञान आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अरुद्धित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तँ

हेत / हत

नघि/ नहि/ नँग/ नगँ/ ले



मनुषीभिः संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सौंसे/ सौंसे

रौं /

रौंरी (सोवौउव)

गाए (गाँग बरि), ऋदा गाँगक दूध (गाँगक दूध ले ।)

बरौं गहिवरौं

हमसि/ अरि

सरौं - सभ

सरौंरुक - सभरुक

धरि - तक

गग- रौत

रूमरौं - समरौं

रूमरौंरौं समरौंरौं रूमरौंरौं - समरौंरौंरौं

हमरौं अरि - हम सभ

अरि- अरि कि

सकैड/ कबैड (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ले)

होअर/ होमि

जाअर (जानि ले, जेना देन जाअर) ऋदा जाअर-रूमि (अर्थ गहिवरौं, तन)

गअर/ जाअर

आड/ जाड/ आडु/ जाडु

ये, कै, सँ, गव (शेदुसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शेदुसँ सँ क२) ऋदा दूरी रा रौंसी रिभङ्गि सँग बरनागव गहिव रिभङ्गि ठाकै सँ क२ । जेना एमे सँ ।

एकरी , दूरी (ऋदा क२ ठी)

रिंकारीक प्रयोग शेदुसँ अन्तमे, रौंरौंमे अन्तमे कएँ ले । आकावाउ अरि अन्तमे अ क रौंरौं रिंकारीक प्रयोग ले (जेना दिअ

, आ दिअ , आ, आ ले)

अपौरुषीयरीक प्रयोग रिंकारीक रौंरौंरौंमे कवरौं अन्तमे आ गाँव शरुंरौंरौं तकरुंकी नुनताक गहिवरौंरौं-
उना रिंकारीक सँकृत कए २ अरुंरौंरौं कलन जागत अरि आ ररुंरौं आ उँरौंरौं दूनु ठाम एकव रौंरौंरौं बरौंरौं
अरि/ बरि सकैत अरि (उँरौंरौंरौंमे रौंरौं बरिरे अरि) । ऋदा अपौरुषीयरी नैरौं अरुंरौंरौंमे गमेरि



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

केसमे लोगत अछि आ ह्येचमे मेदमे जतए एकव प्रयोग लोगत अछि जेना *raison d'etre* एतए सेहो एकव उँचावण बेजेस डेठव लोगत अछि, माल अप्पोद्धीयनी अरकामे ले दैत अछि रवण जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिकारीक रँदना देनाग तकनीकी कर्षे सेहो अद्युचित) ।

अगमे, एहिये/ **एमे**

जगमे, जाहिये

एथन/ **अथन/ अगथन**

कै (के नहि) मे (अव्ययव बहिति)

भर

मे

दर

तँ (त२, त ली)

सँ (स२ स ली)

गठ तव

गठ वग

सॉस खन

जो (जो go, करी जो do)

ते/तअ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगले

जे/जअ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगले

ए/अअ जेना- ए कावण/ एसँ/ अगले/ दूदा एकव एकठी खाम प्रयोग- नावति कतेक दिसँ कहेत बहेत अग

ले/वअ जेना लेसँ/ नगले/ ले दुखारे

नहँ/ लौ

गेलौ/ लेलौ/ लवँ/ गेनहँ/ लेनहँ/ लेनँ

जअ/ जाहि/ जे

जहिँ/ जाहिँ/ जअँ/ जेँ



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

एहि/ अहि/

अग (बालक अतमे ब्राह्म) / अ

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

ओहि/ ओग

सोथि/ सोथ

जोरि/ जोरी/ जोर

बलेही/ बवहि

ते/ तग/ तग

जापर/ जपर

नग/ ने

डग/ डे

बहि/ ले/ नग

गग/ गो

डगि/ डगि ...

समय मेरुदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै डे तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवमे छदप
आ रिभक्ति जूठल छद जना छदमे, छदमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जे

जहिग/ जाहिग/ जगग/ जेगग

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

ओहि/ ओग

सोथि/ सोथ

जोरि/ जोरी/



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

झीरं

भले/ भलेही/

भवहि

ते/ तंग/ तंग

जाधरं/ जधरं

नग/ नै

डग/ डै

नहि/ नै/ नग

गग/

छे

छनि छन्हि

छकन अछि/ छव गछि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्बन्धन गार्हस्थ्य

नीटोँक सूटोमे देन बिकल्पमेसँ लैंग्ज एडिटेर द्वारा कोल कप छनन जेरौक चाली:

रौलेड कएन कप ज्ञाय:

१. होयरना/ होरयरना/ होमयरना/ हेररना, हेमरना/ होयरौक/होरयरना /होयरौक

२. आ/आ२

आ

३. क जेल/क२ जेल/क३ जेल/क४ जेल/क५ जेल/क६ जेल/क७ जेल/क८ जेल/क९ जेल/क१० जेल

४. भ' गेल/भ२ गेल/भ३ गेल/भ४ गेल/भ५ गेल/भ६ गेल/भ७ गेल/भ८ गेल/भ९ गेल/भ१० गेल

गेल

५. कव' गेलाह/कव२

गेलाह/कव३ गेलाह/कव४ गेलाह/कव५ गेलाह/कव६ गेलाह/कव७ गेलाह/कव८ गेलाह/कव९ गेलाह/कव१० गेलाह

६.

दिथ/दिथ दिथ,दिय,दिथ,दिय/

१. कव' रना/कव२ रना/ कव३ रना कव४रना/कव' रना /



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कवेरवी

१. रैवा रवा (शुक्रव), रावी (सूनी) ७

खंड्व खंग

१०. शीयः शीयल

११. दुःख दुथ १

२. छल जल चव लाल/टेल जल

१३. देवविह देवकिह, देवविष

१४.

देखविह देखवि/ देखवेह

१३. डविह/ डवहि डविष/ डलेष/ डवनि

१७. छवेत/देत चवति/देति

१९. एथला

अथला

१५.

रैठनि रैठण रैठहि

१७. ७/७२(सरलाग) ७

२०

७ (सियांजक) ७/७२

२१. हांगि/हांगि हांगग/हांगग

२२.

जे जे/जे२ २३ ना-शुक्रव ना-शुक्रव

२४. केवहि/केवनि/कयलहि

२५. तखलत/ तखल त

२७. जा

बहल/जाय बहल/जाय बहल



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२१. निकतय/निकतय

वागव/ वगव रैलवाय/ रैलवाय वागव/ वगव निकव/रैलवे वागव

२२. उतय/ जतय जत/ उत/ जतय/ उतय

२३.

की बुवव जे कि बुवव जे

२४. जे जे/जे२

२५. कुदि / यदि(योग पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यदि (योग)

२६. ओलो/ ओलो

२७.

हंस/ हंस हंस

२८. लो आकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

२९. सान-सन्व सान-सन्व

३०. डह/ सात ड/डः/सात

३१.

की की/ की२ (दीधीकावस्तुमे २ रजित)

३२. जरौं जरौं

३३. कवयताह/ कवयताह कवयताह

३४. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिय

३५

. लोवाह गयवाह/गयवाह

३६. किड आब किड उव/ किड आब

३७. जाग डव/ जागत डव जाति डव/जेत डव

३८. गहुँटा/ जेँ जागत डव/ जेँ जाग डव गहुँटा/ जेँ जागत डव

३९.

जरौं (मरा)/ जरौं(मोजी)



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

४७. वग/ वघ क/ क२/ वघ क्य / व२ क२/ व२ क्य

४७. व/व२ क्य/

कघ

४८. एखन / एखल / अखन / अखल

४९.

अखिलेँ अखिलेँ

५०. गहीव गहीव

५१.

धाव पाव क्लवाँ धाव पाव क्लवा/क्लवा

५२. जेकाँ जेकाँ

झकाँ

५३. तहिन तहिन

५४. एकव अकव

५५. रँहिन रँहिन

५६. रँहिन रँहिन

५७. रँहिन-रँहिन

रँहिन-रँहिन

५८. नहि/ ले

५९. कवरौ / कवरौय/ कवरौय

६०. तँ/ त २ तय/तय

६१. जेवाकी ये जेठ-जाय/जेठ, जेठ-जाय/जाय

६२. गिजतीये दू भाग/भाय/भाँग

६३. जे पोथी दू भाँग/भाँग/ भाय/ जेव । यारत झारत

६४. माय ये / माय दूद माँक मयत

६५. देहि/ दण दनि/ दएहि/ दएहि दहि/ दैहि

६६. द/ द२/ द



७१. उ (संयोजक) उ२ (सरलाया)

७४. तका कए तकाय तकए

७६. पोले (on foot) पएले कएक/ केक

१०.

ताहुमे ताहुमे

११.

ग्वीक

१२.

रंजा कय कए / क२

१३. रंजाया/रंजाय

१४. रंजा

१३.

दिया दिका

१३.

ततहिँ

११. गवरौवहि/ गवरौवनि/

गवरौवहि/ गवरौवनि

१४. रौव रौव

१६.

छह छह(अङ्क)

+०. जे जे'

+१

. सो के सोके

+२. अङ्कता अङ्कता

+३. बुझिब बुझिब

+४. सुअब



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

/ सुगवका सुगव

+३. सगलक सगलक +३.

भुषि

+१. कवगयो/७ कवेयो ल देवक /कवेयो-कवगयो

+१. सुगव

सुगव

+२. सगल १-सगल

सगल १-सगल

२०. गगल-गगल गोल-गोल

२१. खलखलक

२२. खलखलक

२३. वग

२४. लो- लो लोख

२५. सुगल सुगल

२६.

सुगल (सगलक अर्थमे)

२७. योह यगल / गगल/ गोल/ सगल

२८. ताव

२९. अगल- अगल/ अगल/ अगल

३०. गल- गल

३१.

सुगल

३२. अगल अगल

३३.

अगल (in different sense)-last word of sentence

३४. अगल गगल अगल अगल



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१०३.

ल

१०३. खेवाँ (play) खेवाँ

१०१. शिकायत- शिकायत

१०४.

ठग- ठग

१०५

पठ- पठ

११०. कनिए/ कनिये कनिये

१११. वाकस- वाकस

११२. होय/ होय होय

११३. अडवदा-

उकदा

११४. बुँसेवहि (different meaning - got understand)

११५. बुँसेवहि/बुँसेवहि/ बुँसेवहि (understand himself)

११६. चवि- चवि/ चवि लव

११७. खयाँ- खयाँ

११८.

मोष पाँचवहि/ मोष पाँचवहि/ मोष पाँचवहि

११९. कैक- कैक- कैक

१२०.

वग वग

१२१. जवनाँ

१२२. जवनाँ जवनाँ- जवनाँ/

जवनाँ

१२३. होयत



१२४.

गवरोवहि/ गवरोवनि गवरोवहि/ गवरोवनि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखेत

१२६. कवरोवो (willing to do) कवरोवो

१२७. जेकवा- जकवा

१२८. तकवा- तेकवा

१२९.

बिदेसव झामे/ बिदेसवे झामे

१३०. कवरोवजहुँ/ कवरोवजहुँ/ कवरोवजहुँ कवरोवो

१३१.

हाकि (डिहाका लोवक)

१३२. ओजस रजस ओजसोच/ ओजसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. ओवे भाग/ ओवे-भागे

१३४. गिटा / गिताय/ गिताय

१३५. गप/ ल

१३६. रीटा गप

(ल) गिटा ज्ञाय

१३७. तखस ल (गप) कहेत अछि। कहे/ सुले देखे छव दूदा कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत

१३८.

कतेक लोटे/ कतक लोटे

१३९. कयाज-धयाज/ कयाज- धयाज

१४०

वग वग

१४१. खेवाज (for playing)

१४२.



मनुषीभि संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

डबिहा डबिह

१४३.

होअत होअ

१४४. का कियो / केउ

१४५.

कगे (hair)

१४६.

कस (court-case)

१४७

. केलनाअ/ केलनाय/ केलनाए

१४८. केलनाअ

१४९. ककरी कसी

१५०. कवटा कटा

१५१. कर्म कवम

१५२. डुरीरैअ/ डुरीरौ/ डुरीरि डुरीरैय/ डुरीरै

१५३. एखुलका/

एखुलका

१५४. कए/ किये (राकाक अंतिम गेह)- कए

१५५. कएकक/

कवक

१५६. कवरी कर्षी

१५७

. कवदी कदी

१५८. क्वना कवक क्वना/क्वना२

१५९. क्वनाअ-क्वनाअ

१६०.



तेना ल घेववहि/ तेना ल घेववनि

१७५. नदी/ ले

१७६.

छवा छवा

१७७. कतहा/ कते कही

१७८. उमरिगव-उमरगव उमरगव

१७९. भरिगव

१८०. बोन/बोथव बोथव

१८१. गग/गग

१८२.

क क

१८३. दरर/दर/दर

१८४. गी

१८५.

ध ध

१८६.

धु धु

१८७. धुधुधुधु

१८८. धुधु

१८९. धुधु/ धुधु

१९०. धुधु(धुधुधु धुधु)

१९१. धुधु / धुधु

१९२.

कवरी/कवरी

१९३. कवरी

१९४. कवरी/कवरी



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१+१.

गुँटा गुँट

१+२. बाखवहि बखवहि/ बखवनि

१+३.

वगवहि वगवनि वागवहि

१+४.

बुनि (उँचावा बुजा)

१+५. अछि (उँचावण अगछ)

१+६. एवधि लोवधि

१+७. रिउल/ रिउेल/

रिउेल

१+८. कवरौउवहि/ कवरौवनि

करेवधिह/ करेवधि

१+९. करएवहि/ करेवनि

१२०.

आहि कि

१२१. गुँटा

गुँट

१२२. रौती जवाय/ जवाए जवा (आणि वगा)

१२३.

मे मे

१२४.

हौ मे हौ (लौमे हौ रिउरिउमे लौ कए)

१२५. खेव खेव

१२६. खजव(spacious) खेव

१२७. लोयतहि/ लोएतहि/ लोएतनि/लेतनि/ लेतहि



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१७५. हाथ मटियाएरें/ हाथ मटियारिया/हाथ मटियाएरें

१७७. लका हेंका

२००. देखाए देखा

२०१. देखाएरें

२०२. सतुवि सतुव

२०३.

सालेरें सालेरें

२०४. गालेह/ लावहि/ लावनि

२०५. लेखीक/ लेखीक

२०६. केजा/ कएजह/कएजो/ केज

२०७. किड न किड/

किड ल किड

२०८. घुमेजह/ घुमाउजह/ घुमेजो

२०९. एजाक/ अजाक

२१०. अः/ अह

२११. नया/

नय (अर्थ-परिवर्तन) २१२. कनीक/ कलक

२१३. सरलक/ सतक

२१४. गिना२/ गिवा

२१५. क२/ क

२१६. जा२/

जा

२१७. आ२/ आ

२१८. भ२ /भ' (१) यक्षक कमीक द्यातक)

२१९. निप्रय/ नियम

२२०



लेबदेथवा/ लेबदेयव

२२१. पहिव अफव ठा रीदका रीचक ठ

२२२. तहि/तहिं/ तथि/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. तँअ

तै / तथ

२२५. नँअ/ नअ/ नथि/ नहि/नै

२२६. हे/ हय / एवीहै/

२२७. डथि/ डै/ डैक / डअ

२२८. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२२९. थी (come)/ थीं (conjunction)

२३०.

थी (conjunction)/ थीं (come)

२३१. कला/ कोला, कोना/केना

२३२. गोलैह-गवहि-गवनि

२३३. लेवीक- लोएवीक

२३४. केनौ- कएनौ-कएनहूँ/केनौ

२३५. किड न किड- किड ल किड

२३६. केतेण- केहन

२३७. थीं (come)-थीं (conjunction-and)/थीं । थीं-थीं /थींह-थींह

२३८. हयत-हैत

२३९. घुमेनहूँ-घुमेनहूँ- घुमेनारै

२४०. एवक- अएनाक

२४१. लोनि- लोअ/ लोहि

२४२. उ-वाम उ आगक रीच (conjunction), उर कहनक (he said)/उ

२४३. की हय/ कोनी अथवी हय/ की है । की हअ



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२४४. दृष्टि/ दृष्टियै

२४५.

गोपिय/ गोपिय

२४६. ठै / ठै/ तमि/ तहि

२४७. जौ

/ जौ/ जौ

२४८. सभ/ सरै

२४९. सभक/ सर्वलक

२५०. कहि/ कलि

२५१. कला/ काला/ कालहू/

२५२. शबरकती भय गेव/ भय गेव/ भय गेव

२५३. कला/ कला/ कला/ कला

२५४. थः/ थः

२५५. जलै/ जलै

२५६. गेवनि/

गेवनि (अर्थ परिवर्तन)

२५७. केवहि/ केवहि/ केवनि/

२५८. नया/ नया/ नया (अर्थ परिवर्तन)

२५९. कनीक/ कनीक/ कनी-मनी

२६०. गठवहि गठवनि/ गठवगल/ गठवगल/ गठवगल/ गठवगल/

२६१. निथय/ निथय

२६२. हेबटथव/ हेबटथव

२६३. गलि अरुव बल ठा रीटमे बल ठा

२६४. आकावाप्तये रिक्वावीक प्रयोग उचित ले/ अप्रोत्प्राप्तये प्रयोग हास्यक तकनीकी न्यूनताक परिचायक
ओकव रैदना अरुग्रह (रिक्वावी) क प्रयोग उचित

२६५. केव (पद्यमे ग्राह) / -क/ क२/ के

२६६. ठैलि- ठैलि



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२१०. भेष्ट/ भेष्ट/ भेष्ट

२११.

ख/ ख/ खुना (खेव ख/ खेव ख)

२१२. तक/ धवि

२१३. ग२/ लो (meaning different - जनरों ग२)

२१४. म२/ सँ (मद द२, न२)

२१५. ७. ७. (तीन अक्षरक मेल रँदना प्रकृष्टिक एक आ एकठा दोसबक उँगयोग) आदिक रँदना ह्रु आदि। मह ७. ७. मह ७. ७. कर्ता/ कर्ता आदिसे त संशुद्धक कोना आरंभकता मैथिलीमे ले अछि। **रउर**

२१६. रैमी/ रैमी

२१७. राना/ राना रँवा/ रना (बहरँना)

२१८

२१९. रावी/ (रँदनेवावी)

२२०. राती/ राती

२२१. अस्तुर्विष्टिय/ अस्तुर्विष्टीय

२२२. मय/ मय

२२३. मयभवका/ मयभवका

२२४. माली/ माली (

भेष्टेता/ भेष्टे)

२२५. मगव/ मगव

२२६. हरौ/ हरौ

२२७. बाखवक/ बाखवक

२२८. आ (come)/ आ (and)

२२९. गशतांग/ गशतांग

२३०. २ केव बारहाव शिष्टक अस्तुमे मात्र, यथासंभव रीटमे ले।

२३१. कहत/ कहत

२३२.

बह (डव)/ बह (डव) (meaning different)



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३१. तागति/ ताकति

३२. खवाग/ खवारै

३३. लौग/ लौगि/ लौगिनि

३४. जार्ति/ जार्ति

३५. कागज/ कागज/ कागज

३६. गिले (meaning different - swallow)/ गिल (थस)

३७. बर्दिय/ बर्दिय

DATE-LIST (year - 2013-14)

(१४२५ फसवी साव)

Marriage Days:

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

Upanayana Days:

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.

June 2014- 2, 8, 9.



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Dv i r agaman Dī n:

November 2013– 18, 21, 22.

December 2013– 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014– 16, 17, 19, 20.

March 2014– 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014– 16, 17, 18, 20.

May 2014– 1, 2, 9, 11, 12.

Mundan Dī n:

November 2013– 20, 22.

December 2013– 9, 12, 13.

January 2014– 16, 17.

February 2014– 6, 10, 19, 20.

March 2014– 5, 12.

April 2014– 16.

May 2014– 12, 30.

June 2014– 2, 9, 30.

FESTIVALS OF MTHI LA (2013–14)

Mauna Panchami -27 July

Madhushravani - 9 August

Nag Panchami - 11 August

Raksha Bandhan- 21 Aug

Krishnastami - 28 August



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Kushi Amavasya / Somvar i Vr at - 5 Sept ember
Har t al i ka Teej - 8 Sept ember
Chaut hChandr a-8 Sept ember
Vi shwak arma Pooj a- 17 Sept ember
Anant Catur dashi - 18 Sep
Pi t ri Paksha begi ns - 20 Sep
Ji moot avahan Vr at a/ Ji ti a-27 Sep
Mat ri Navami -28 Sep
Kal ashst hapan- 5 Oct ober
Bel naut i - 10 Oct ober
Pat ri ka P r avesh- 11 Oct ober
Mahast ami - 12 Oct ober
Maha Navami - 13 Oct ober
Vi j aya Dashami - 14 Oct ober
Koj agar a- 18 Oct
Dhant er as - 1 November
Di yabat i , shyama pooj a-3 November
Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-4 November
Bhr at ri dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a- 5 November
Chhat hi -8 November
Sama Pooj aar ambh- 9 November
Devot t han Ekadashi - 13 November
r avi vr at ar ambh- 17 November



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Navanna par van - 20 November

Kar t i k Poor ni ma - Sama Vi sar j an - 2 December

Vi vaha Panchmi - 7 December

Makar a / Teel a Sankranti -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 Januar y

Basant Panchami / Sar aswati Pooj a - 4 Febr uar y

Achl a Sapt mi - 6 Febr uar y

Mahashi var at ri -27 Febr uar y

Hol i kadahan -Fagua -16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a - 17 Mar ch

Var uni Trayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 April

Ram Navami - 8 April

Akshaya Tritiya -2 May

Janaki Navami - 8 May

Ravi Br at Ant - 11 May

Vat Savi tri -bar asai t - 28 May

Ganga Dashhar a -8 June

Har i vas ar Vr at a - 9 Jul y

Shr ee Guru Poor ni ma -12 Jul

VI DEHA ARCHI VE

१ पत्रिकाक सबठो पुवाष अंक ब्रैल-रिदेह ज्ञ, तिवहूत आ देरणागरी कषमे Vi deha e i ournal 's
all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बिदेह अर्थात् ३.० पत्रिकाक पहिल -

बिदेह अर्थात् अर्थात् ३.० पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

इडियो संकलन आँ मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४. मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-videos>

३. आधुनिक चित्रकला आँ चित्र / चिथिना चित्रकला. Maithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

बिदेहक एहि सब सलसोगी विकसव सेहो एक खेब जाड ।

७. बिदेह मैथिली क्लिप :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत एग्रीजेशन :

<http://videha-aggregation.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अर्बुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

९. बिदेहक पूर्व-रूप "बालसविक गाड" :

<http://gajendratyakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गडिअ :



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फागल :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पलिन तिवहूता (मिथिलाष्कर) जानवृत (रैलंग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:रैलंग: मैथिली रैलंगमे: पलिन रैव बिदेह द्वावा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAI THIL I FORTNI GHTLY EJ OURNAL ARCHI VE

<http://videha-archi ve.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका मैथिली पोथीक आर्कागर

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका ऑडियो आर्कागर

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१७. बिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका रीडियो आर्कागर

<http://videha-video.blogspot.com/>

१८. बिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१९. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानवृत)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०. प्रकाशिस श्रुति.

<http://www.shruti-publication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VI-DEHA/>



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेक


<http://gajendrathakur123.blogspot.com>


२४. लषा कुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२३. बिदेह लेडियोकलित आदिक पहिन पोडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  [Videha Radio](http://VidehaRadio.com)

२१.  [Join official Videha facebook group](http://JoinofficialVidehafacebookgroup.com)

२४. बिदेह मैथिली सांठ उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समदिया

<http://esamaad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अक्षरिहार आथर

<http://anchinharakharakolkat.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-haiku.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहसि कथा

<http://vihankatha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिता



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३७. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३१. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महत्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLe FOR free PDF
DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



मनूषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



रिदेह:सदेह:९: २: ३: ४:३:७:१:+२९९० "रिदेह"क छिष्ट संस्करण: रिदेह-३-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छ्मन बच्चा समिति।

सम्पादक: गजेश्वर ठाकुर।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site
<http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

रिदेह



मैथिली साहित्य श्रमदान



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(c) २००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाराण आ जतए लेखकक नाम बहि अछि ततए संपादकाधीन । रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: गिर कमार साँ, बाबू रिवाम साँ, आँ कुराँजी (मेलारु कमार कर्ण) । भाँ-संपादक: बाँगेन्द्र कमार साँ आँ पंजरीकर विष्णुानन्द साँ । कव-संपादक: जति साँ टोषरी आँ बग्गि लेखी मिह । संपादक-लेख-अनुवाँ: सँ. जयाँ रमाँ आँ सँ. बाँजीर कमार रमाँ । संपादक-भाँक-बंगल-चवचि- लेख ठाँकुर । संपादक- सुलो-संपर्क-समाँ- पुनम मंडल आँ धिबंजी साँ । संपादक- अनुवाद विभाग- विनीत उँगेव ।

बचनाकार अण मूलिक आँ अणकाशित बचना (जकर मूलिकताक संपूर्ण उँतबदागिह लेखक गणक मया डहि) ggajendra@videha.com लेँ मेल अँटेचमेँशक कगमेँ .doc, .docx, .rtf राँ .txt फॉर्मेटमेँ पठाँ सकेत छुधि । बचनाक संग बचनाकार अण सक्रिय परिचय आँ अण कँन कएन गेल ह्योँठेँ पठेतह, मेँ अणिाँ करेत छी । बचनाक अँतमेँ ठाँगप बहय, जेँ ङ बचना मूलिक अँडि, आँ पहिनेँ प्रकाशिक हेतु रिदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकाकेँ देन जाँ बहन अँडि । मेल थोँपु होयराँक बाँद मथामँतर शीघ्र (साँत दिनक भीतब) एकब प्रकाशिक अँकक सूचना देन जाँयत । 'रिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका अँडि आँ एँमेँ मैथिली, संसृत आँ अंग्रेजीमेँ मिथिला आँ मैथिलीसँ सर्वाधिकार बचना प्रकाशित कएन जाँगत अँडि । एहि ङ पत्रिकाकेँ त्रीमति कमाँ ठाँकुर द्वाँबाँ माँसक ०१ आँ १३. तिथिकेँ ङ प्रकाशित कएन जाँगत अँडि ।

(c) 2004-13 सर्वाधिकार सुरक्षित । रिदेहमेँ प्रकाशित सतुँठाँ बचना आँ आँर्कारक सर्वाधिकार बचनाकार आँ सँग्रहकर्ताक नगमेँ डहि । बचनाक अनुवाद आँ पुनः प्रकाशिक किराँ आँर्कारक उँपयोगक अँधिकार किराँक हेतु ggajendra@videha.com पब संपर्क कक । एहि साँगँठकेँ त्रीति न्याँ ठाँकुर, मनुषिकाँ टोषरी आँ बग्गि थियाँ द्वाँबाँ डिजाँगण कएन गेल ।



मिह वडुँ

